कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qksu (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

संगठनात्मक गतिविधियां

बिहार : परिवर्तन यात्रा 7

सरकार की उपलब्धियां

'स्किल इंडिया' मिशन का शुभारंभ 9
नीति आयोग बैठक 11

वैचारिकी

भारतीय जनसंघ ही क्यों ?
डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी 12

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह जी नहीं रहे 14

साक्षात्कार

मुरलीधर राव, राष्ट्रीय महामंत्री, भाजपा 15

विदेश यात्रा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सफल मध्य एशिया यात्रा 18

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष का प्रवास

मुंबई (महाराष्ट्र) 24
कानपुर (उत्तर प्रदेश) 25
भोपाल (मध्यप्रदेश), दिल्ली 26
गुवाहाटी (असम) 28

लेख

'स्किल इंडिया' आवश्यक है 'मेक इन इंडिया' के लिए
–राम नयन सिंह 29

शत्-शत् नमन!

कुशाभाऊ ठाकरे

जयंती : 15 अगस्त

गुरु की खुशी

एक बार एक अनुभवी हकीम गुरु गोविंद सिंह के दर्शन के लिए आनंदपुर आया। जब वह गुरु गोविंद से मिलकर वापस लौटने लगा तो उन्होंने उसे गुरु मंत्र देते हुए कहा, 'जाओ, तुम दीन-दुखियों की मन लगाकर सेवा करो।' हकीम अपने घर लौटकर समर्पण भाव से हकीमी करने लगा। जब भी कोई बीमार आदमी उसके पास आता, वह सेवा समझकर बड़े प्रेम से उसका उपचार करता। एक दिन सुबह के समय हकीम इबादत में लीन था, तभी गुरु गोविंद सिंह उसके घर आ पहुंचे।

हकीम को इबादत में तल्लीन देख वे उसके पास बैठ गए। हकीम को गुरु गोविंद सिंह के आने का पता ही नहीं चला। तभी किसी ने बाहर से आवाज लगाई- 'हकीम जी, मेरे पड़ोसी की तबीयत बहुत खराब है। उसे बचा लीजिए।' आवाज सुनकर जब हकीम ने आंखें खोलीं तो गुरु गोविंद सिंह को पास बैठा पाया। वह असमंजस में पड़ गया कि उस आदमी के साथ जाए या इतनी दूर से आए गुरुजी की सेवा करे। हकीम ने उस आदमी के साथ जाने का निश्चय किया और रोगी का समुचित इलाज करने के बाद वापस लौटा।

लौटने पर उसने देखा कि गुरु गोविंद सिंह अभी तक उसके इंतजार में बैठे थे। गुरुजी को इतना इंतजार कराने के लिए उसे बड़ा अपराध बोध हुआ। वह उनके पैरों में गिर कर क्षमा मांगने लगा। गुरुजी ने हकीम को गले से लगा लिया और बोले- 'मैं तुम्हारे कर्तव्य पालन और सच्चे सेवा भाव से बहुत प्रसन्न हूं। मेरे यहां होने के बावजूद तुम मरीज की सेवा करने गए। सच बात यह है कि दुखियों की सेवा ही गुरु को सच्ची सेवा देती है। तुमने अपना कर्तव्य निभाकर मुझे ऐसी ही खुशी प्रदान की है।'

संकलनः राधा नाचीज

(नवभारत टाइम्स से साभार)

पाथेय

राष्ट्र के विधायक तत्त्व

राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम, भूमि और जन, जिसे देश कहते हैं। दूसरी, सबकी इच्छाशक्ति यानी सामूहिक जीवन का संकल्प। तीसरी, एक व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं और सबसे अच्छा शब्द जिसके लिए हमारे यहां प्रयुक्त हुआ है, वह है 'धर्म'। और चौथा है जीवन-आदर्श। इन चारों का समुच्चय यानी ऐसी समष्टि को राष्ट्र कहा जाता है। जिस प्रकार व्यक्ति के लिए शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा जरूरी है, इन चारों को मिलाकर व्यक्ति बनता है, उसी प्रकार देश, संकल्प, धर्म और आदर्श के समुच्चय से राष्ट्र बनता है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

'महागठबंधन' की निकली हवा

बिहार परिवर्तन को तत्पर है। हाल ही में हुए विधान परिषद चुनावों के परिणाम का संदेश स्पष्ट है। लोगों ने भाजपानीत एनडीए को वोट दिया। 'महागठबंधन' का भूत बिहार की राजनीति से उतर गया। इस अवसरवादी एवं सिद्धांतहीन गठबंधन को लोगों ने नकार दिया। बिहार की जनता की आशाएं अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके विकसित, सुदृढ़ एवं समृद्ध भारत के निर्माण के सपनों से जुड़ चुकी हैं। बिहार अब पिछड़ना नहीं चाहता, वह देश के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहता है। लालू-नीतीश-कांग्रेस की जाति-संप्रदायवादी राजनीति को लोगों ने देख लिया, अब वे इनसे छुटकारा चाहते हैं। लोगों की आंखों में अब नये बिहार का स्वप्न है। वे ऐसा बिहार बनाना चाहते हैं जिसके लिये यह प्रदेश प्राचीन काल से पूरे विश्व में विख्यात रहा है। यह सपना अब सच होने वाला है, क्योंकि लोगों ने फिर से सपने देखने शुरू कर दिये हैं और वे नरेन्द्र मोदी के सपनों के साथ खड़े हैं।

यह महागठबंधन क्या है? यह लोगों द्वारा नकारे गये-हारे हुए लोगों का जमावड़ा है जो अपना अस्तित्व बचाने में लगे हैं। लालू-नीतीश-कांग्रेस एक साथ आ गये हैं क्योंकि उनकी नाव डूब रही है। क्या एक डूबती नाव दूसरे डूबती नाव को बचा सकती है? कांग्रेस स्वयं लोकसभा में केवल 44 सांसदों वाली पार्टी बनकर रह गई है और बिहार में तो अब यह बची ही नहीं। देश में बिहार को सबसे पिछड़ा राज्य बनाने का श्रेय सबसे पहले कांग्रेस को ही जाता है और इसका लंबा कुशासन, भ्रष्टाचार और सत्तालोलुप राजनीति आज भी लोगों के दिमाग में ताजा है। लालू-राबड़ी राज को कोई कैसे भूल सकता है? 'जंगल-राज' जिसमें किसी की जान-माल सुरक्षित नहीं थी तथा हत्या, लूट, अपहरण एक उद्योग बन चुका था। भ्रष्टाचार लालू-राबड़ी राज का पर्याय था और जाति-संप्रदाय में समाज का बांटने की राजनीति खुलेआम होती थी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि इस जंगल-राज को कांग्रेस का बिना शर्त समर्थन हासिल था। ऐसा लगता था मानो लालू-राबड़ी कांग्रेस का ही एजेण्डा पूरा करने में लगे थे। लोगों ने बिहार के हालिया इतिहास के इन काले पन्नों को अभी भुलाया नहीं है और वे अच्छी तरह जानते हैं कि लालू-कांग्रेस ने मिलकर बिहार का बेड़ा गर्क किया है।

नीतीश कुमार जो इस जंगल-राज से लड़ने एवं सुशासन-विकास की दुहाई देकर सत्ता में आये आज उसी लालू-कांग्रेस के चरणों में लोट रहे हैं। जिस कांग्रेस और लालू का विरोध कर नीतीश कुमार ने अपनी राजनीति चमकाई आज बेशर्मी से उन्हीं के रहमो-करम पर सत्ता में लौटना चाहते हैं। इस 'महागठबंधन' से पहले 'जनता परिवार' के विलय की बात सुर्खियों में रही थी, पर उसका क्या हश्र हुआ सभी जानते हैं। क्या जो लोग आपसी लड़ाई में फंसे हैं बिहार की तकदीर बदल सकते हैं? जब ये विलय नहीं कर सकते तो महागठबंधन क्या चलायेंगे? और तब जबकि सबका ध्यान सत्ता कब्जाने पर हो तब इस गठबंधन का भगवान ही मालिक है। कोई भी गठंबधन जो अवसरवादी और सिद्धांतहीन हो वह जनता का विश्वास कभी प्राप्त नहीं कर सकता। नीतीश कुमार भ्रम में हैं कि वे लालू-कांग्रेस के सहारे फिर से मुख्यमंत्री बन जायेंगे। बिहार की जनता उन्हें भाजपा से विश्वासघात कर लोगों के पीठ में छुरा घोंपने के लिये कभी माफ नहीं करेगी। उन्होंने बिहार के विकास एवं सुशासन की ओर बढ़ते कदमों को रोककर बिहार की जनता के जंगलराज के विरूद्ध संघर्षो की बलि दे दी। लोकसभा के चुनावों में लोगों ने नीतीश कुमार को सच्चाई से रूबरू करवा दिया तथा इन विधान परिषद के चुनावों में उन्हें फिर से आइना दिखाया है। महागठबंधन से बिहार को भविष्य के लिए कोई आशा नहीं। यह हारे-नकारे गये लोगों का जमावड़ा मात्र है।

देश की विरासत को विचारधारा के आधार पर नहीं बांटा जा सकता : मोदी

राजनीतिक छुआछूत को एक सिरे से नकारते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 17 जुलाई को इस बात पर जोर दिया कि भारत की विरासत को विचारधारा के आधार पर नहीं बांटा जा सकता है। उन्होंने कहा कि विगत के सभी राजनीतिक नेता हमारे आदर के पात्र हैं क्योंकि उन्होंने हमारे देश को बेहतर बनाने के लिए कार्य किया है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री जम्मू विश्वविद्यालय में स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल डोगरा की जन्मशती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल डोगरा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वे देशप्रेम से प्रेरित होकर सार्वजनिक जीवन में आए हैं। उन्होंने इस तथ्य के बारे में बताया कि श्री डोगरा ने 26 बजट पेश किए थे। जो राजनीति में उनकी स्वीकार्यता और हाथ में लिए गए कार्य के प्रति उनके समर्पण और निपुणता का सूचक है। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल डोगरा ने अनेक राजनीतिक नेता तैयार किये हैं।

इस अवसर पर श्री मोदी ने कहा कि हमारी विरासतें कभी बंटनी नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि हम जो आज की पीढ़ी के लोग हैं उनका काम नहीं है कि उनके लिए हम दीवार पैदा करें, हमारे लिए तो वो सभी महापुरूष हैं, उन सभी महापुरूषों ने, जिसके लिए देश के लिए काम किया है आदर और गौरव का विषय होना चाहिए, इसमें कभी छुआछूत नहीं होना चाहिए। वो नेशनल कांफ्रेंस में थे या कांग्रेस में थे, प्रधानमंत्री को आना चाहिए कि नहीं आना चाहिए। सवाल यह नहीं है आना इसलिए चाहिए कि उन्होंने अपनी जवानी देश के लिए खपाई थी।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि मुझे याद है जब अटल जी की सरकार बनी, पहली बार अटल जी प्रधानमंत्री बने थे। पहली बार या दूसरी बार, पहली बार शायद 13 दिन के थे, दूसरी बार मुझे याद नहीं रहा और उसी दिन कम्युनिस्ट पार्टी के एक बहुत बड़े नेता, जिनका केरल में

शेष पृष्ठ 23 पर

बिहार की जनता लालू-नीतीश-कांग्रेस ब्रांड की राजनीति से धोखा खाते-खाते थक चुकी हैं। प्रदेश पिछड़ा का पिछड़ा रहा और इनके नेतृत्व में और अधिक पिछड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। जाति-संप्रदाय की राजनीति ने स्थिति को और अधिक गंभीर बना दिया है। लोग विकास चाहते हैं, रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा और निश्चित भविष्य चाहते हैं। अब वे फिर से पिछड़ना नहीं चाहते। वे देश के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं और आर्थिक खाई को पाटना चाहते हैं। भाजपा ही अब एकमात्र आशा है। इसके पास दृढ़ एवं प्रतिबंद्ध नेतृत्व है। लोगों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भरोसा है और वे उनके सपनों के साथ चलना चाहते हैं जिसमें पूर्व के पिछड़े राज्य बाकी देश के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें। लोग उस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं जब विकास एवं सुशासन के लिये वे भाजपा को वोट देंगे। बिहार को आगे बढ़ना है और अब यह इस सुनहरे अवसर को नहीं खो सकता। अपने सुनहरे भविष्य के लिये वह निश्चित रूप से देश के साथ आगे बढ़ेगा। बिहार में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने परिवर्तन रथ को झंडी दिखाकर रवाना किया है जिसे भारी समर्थन मिल रहा है।

लोग बदलाव चाहते हैं और परिवर्तन रथ लोगों तक सही संदेश पहुंचा रहा है। अब बिहार को इस अवसरवादी- सिद्धांतहीन महागठबंधन के चंगुल से मुक्त कराने का समय आ गया है। ■

बिहार को सर्वोत्तम राज्य बनाने हेतु भाजपा कृतसंकल्पित : अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने बिहार के चुनाव प्रचार अभियान का किया शुभारम्भ

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 16 जुलाई 2015 को गांधी मैदान से एनडीए के परिवर्तन यात्रा का शुभारम्भ कर के बिहार चुनाव प्रचार अभियान की शुरुआत की और जनता दल गठबंधन पर जमकर हमला बोला।

बिहार के सभी जनप्रतिनिधि और पूरी जनता को बधाई देते हुए श्री शाह ने कहा कि विधान परिषद् के चुनाव में 24 में से 13 सीटें देकर जनता ने राजग को जिताकर हमारे विजय अभियान की शुरुआत कर दी है। उन्होंने कहा कि विधान परिषद् चुनाव में एनडीए की जीत से साफ पता चलता है कि बिहार में अब हमारी सरकार आने वाली है। उन्होंने कहा कि अब देखना होगा कि राज्य में गरीबी, जंगलराज और भ्रष्टाचार लाने वाले सत्ता में रहेंगे या बिहार को विकास के पथ पर अग्रसर करने वाली एनडीए सरकार। उन्होंने कहा कि 15 साल तक लालू जी और राबड़ी देवी की सरकार को आज भी जनता भूल नहीं पाई है। कुछ समय पहले तक नीतीश एनडीए को सत्ता में लाने और लालू के बिहार के जंगलराज को हटाने की बात किया करते थे। आज नीतीश जी क्यों बदल गए? उनका आदर्श कहाँ चला गया? श्री शाह ने जनता से अपील करते हुए कहा कि सुशासन लाना है तो बिहार में एनडीए की सरकार बनानी पड़ेगी। श्री शाह ने कहा कि नीतीश कुमार ने बिहार की जनता के जनादेश की पीठ में छूरा भोंका है।

- भाजपा अध्यक्ष ने 160 परिवर्तन रथों को दिखाई हरी झंडी
- मोदी जी के नेतृत्व में बिहार में दो तिहाई बहुमत से भाजपा बनाएगी मजबूत सरकार
- भाजपा बिहार के गौरव को वापस लाने तथा बिहार को सर्वोत्तम राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्पित है
- नीतीश और लालू की सरकार बनी तो बिहार में फिर से आएगा जंगलराज
- भाजपा का परिवर्तन रथ श्री नरेन्द्र मोदी के दूत बनकर बिहार के हर गाँव तक पहुंचेंगे
- केंद्र की मोदी सरकार गरीबों की सरकार है और गरीबों का विकास ही इसकी प्राथमिकता है
- बिहार की जनता ने विधान परिषद चुनाव में विजय श्री दिलाकर हमारे विजय अभियान की शुरुआत कर दी है

श्री शाह ने कहा कि बिहार महावीर और बुद्ध की धरती है, यह जयप्रकाश नारायण और राजेंद्र प्रसाद की धरती है, यह अशोक और चन्द्रगुप्त मौर्य की धरती है, यह कर्पूरी ठाकुर और बाबू जगजीवन राम की धरती है, लेकिन लालू जी के कुशासन, भ्रष्टाचार और जंगलराज ने इसे बदनाम कर दिया।

श्री शाह ने कहा कि यहां मंच पर पासवान जी हैं, कुशवाहा जी हैं, जीतन राम मांझी हैं, पूरा एनडीए एकजुट है।

उन्होंने कहा कि एक तरफ राजग गठबंधन है जिसके सभी नेता आज एकजुट, बिहार से जंगलराज के खात्मे, इसके अभूतपूर्व गौरव को वापस लाने तथा बिहार को सर्वोत्तम राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्पित हैं वहीं दूसरी तरफ यूपीए है जहाँ एकजुटता तो दूर, उनके नेताओं में एक साथ आने की भी हिम्मत नहीं है। नीतीश में हिम्मत नहीं है कि लालू जी का फोटो अपने पोस्टर में साथ में लगाएं। सोनिया भी लालू को साथ बिठाने से परहेज करती हैं। उन्होंने कहा कि क्या बिहार की जनता महादलित को धोखा देने वाली पार्टी की सरकार बनाना चाहेगी? क्या बिहार की जनता जनमत का अनादर करने वाली युगल जोड़ी की सरकार बनाना चाहेगी?

उन्होंने कहा कि गौरवशाली बिहार को लालू-नीतीश ने अब तक के शासन में बर्बाद कर दिया। अगर फिर से नीतीश-लालू के हाथ में सत्ता गई तो जंगल राज आएगा। क्या बिहार की जनता फिर से जंगलराज लाने के लिए लालू और नीतीश की सरकार बनाना चाहेगी? अगर नहीं चाहते तो मजबूत एनडीए की सरकार बनायें।

नीतीश के प्रचार अभियान पर तंज कसते हुए श्री शाह ने कहा कि पर्दा या पोस्टर लगाने से कोई फायदा नहीं है। अब बिहार के दिल में सिर्फ एनडीए है। बिहार की जनता ने विकास के लिए राजग को अपना समर्थन देना तय कर लिया है। नीतीश कुमार ने लालू का हाथ थामकर बिहार की जनता की पीठ में खंजर भोंकने का काम किया है। हम बिहार विधानसभा में दो तिहाई से अधिक सीटें जीतकर मजबूत सरकार बनाने वाले हैं।

उन्होंने केंद्र सरकार की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि पिछड़े समाज का बेटा और एक चाय बेचने वाला गरीब जब देश का प्रधानमंत्री बना तो उसे के दर्द का एहसास था, उसे पता चला कि गरीबों का बैंक में खाता नहीं है। तब श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व वाली केंद्र सरकार जन-धन योजना लेकर आई ताकि उनके विकास के लिए आवंटित की गई राशि सीधे उन तक पहुंचे। आज गरीबों के विकास की बात हो रही है। गरीबों के सम्मानित जीवन के लिए, उन्हें रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए तथा उनके लिए फंड के दरवाजे खोलने का काम मोदी सरकार ने ही किया है। चाहे जन-धन योजना हो, जीवन सुरक्षा बीमा योजना हो, दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना हो, मुद्रा बैंक योजना हो या फिर मृदा स्वास्थ्य कार्ड - भाजपा नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने सारी योजनाएं गरीबों को ही ध्यान में में रखकर बनाई है। स्पष्ट है कि यह सरकार गरीबों की सरकार है और गरीबों का विकास ही इसकी प्राथमिकता है। ऐसा भाजपानीत केंद्र सरकार के कारण ही संभव हो सका है। उन्होंने कहा कि बिहार में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए हमारी सरकार ने इलाहाबाद से पटना और हल्दिया तक जलमार्ग बनाने का फैसला किया है, किसानों के उत्पाद को सरकार द्वारा खरीदा जाएगा, युवाओं को रोजगार मिलेगा और जंगलराज खत्म होगा। उन्होंने आम जनता से अपील की कि अगर ऐसा चाहते हैं तो बिहार में एनडीए की सरकार बनानी होगी। हम जाति-पांति की बात नहीं करते हैं, गरीबी की कोई जाति नहीं होती लेकिन अगर गरीबी दूर करना है तो हमारी एनडीए की सरकार बनानी होगी।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि आने वाले दिनों में जाति व मजहब की बात की जाएगी, लेकिन इससे विकास नहीं होने वाला। हमें इससे ऊपर उठकर यहाँ भाजपा की सरकार बनानी होगी। हम बिहार के विकास के लिए कटिबद्ध हैं और बिहार का पुराना गौरव वापस दिलाएंगे।

कार्यक्रम के अंत में श्री शाह ने एनडीए के 160 परिवर्तन रथों को रवाना किया। उन्होंने कहा कि जल्द ही इनकी संख्या 260 की जाएगी, जो मोदी जी का दूत बनकर हर गांव तक पहुंचेंगे। ये सभी एनडीए के प्रत्याशियों के लिए प्रचार करेंगे और बिहार से भ्रष्टाचार तथा कुशासन के जंगलराज को जड़ से उखाड़ फेंकने की दिशा में काम करेंगे। श्री शाह ने कहा कि कांग्रेसमुक्त भारत का सपना जो मोदी जी ने देखा है, हमें उसे बिहार में भी लागू करना है। ■

बाराबंकी घटना की जांच हेतु केंद्रीय टीम का गठन

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 11 जुलाई 2015 को उत्तर प्रदेश में बढ़ती उत्पीड़न की घटनाओं विशेषत: बाराबंकी के थाने में महिला को जलाने की घटना की जांच के लिए एक केन्द्रीय टीम का गठन किया है जो घटना स्थल पर जाकर, जांच करके अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष को सौंपेगी। इस टीम में निम्न सदस्य होंगे -

1. श्री अश्विनी कुमार चौबे, सांसद (संयोजक)
2. श्री एम.जे अकबर, सांसद
3. श्रीमती मीनाक्षी लेखी, सांसद
4. श्री अर्जुन मेघवाल, सांसद

सरकार की उपलब्धियाँ : 'स्किल इंडिया' मिशन का शुभारंभ

भारत को कुशल मानव संसाधन का वैश्विक केंद्र बनना होगा : नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 15 जुलाई को नई दिल्ली में महत्वाकांक्षी कौशल विकास अभियान 'स्किल इंडिया' की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि जिस तरह चीन वैश्विक विनिर्माण कारखाना बन गया है, वैसे ही भारत को दुनिया के 'मानव संसाधन के केंद्र' के रूप में उभरना चाहिए। सरकार ने 'गरीबी के खिलाफ लड़ाई' के तहत यह अभियान शुरू किया है। श्री मोदी ने कहा कि अगर देश के लोगों की क्षमता को समुचित और बदलते समय की आवश्यकता के अनुसार कौशल का प्रशिक्षण दे कर निखारा जाता है तो भारत के पास दुनिया को 4 से 5 करोड़ कार्यबल उपलब्ध करा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत विश्व के लिए कुशल कार्यबल उपलब्ध कराने वाला विश्व का सबसे बड़ा देश बन सकता है। ऐसा करने के लिए न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में मानव शक्ति की जरूरतों का पता लगाने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि कई विकसित देश हैं जिनके पास संपत्ति तो है लेकिन पर्याप्त मानव संसाधन नहीं है। अगर भारत में उपयुक्त कौशल का विकास हो तो देश निकट भविष्य में उन देशों की जरूरतों को पूरा करने की स्थिति में हो सकता है। उन्होंने कहा कि अगर 20वीं सदी ने भारत के अग्रणीय तकनीकी संस्थानों- आईआईटी को वैश्विक नाम अर्जित करते देखा है तो 21वीं शताब्दी के लिए यह अपेक्षित है कि आईटीआई (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) गुणवत्ता युक्त कुशल मानव शक्ति तैयार करने के लिए वैश्विक मान्यता अर्जित करे।

दुनिया और प्रौद्योगिकी में तेजी से बदलाव को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण और अगले 10 साल के लिये योजना तैयार करने की जरूरत है। उन्होंने उद्योग तथा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के बीच नियमित रूप से बातचीत की जरूरत को रेखांकित किया। कौशल विकास अभियान 'स्किल इंडिया' की शुरुआत करते हुए श्री मोदी ने कहा कि अगर चीन दुनिया का विनिर्माण कारखाना है तो भारत को

दुनिया का मानव संसाधन का प्रमुख केंद्र बनना चाहिए। यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए और हमें इस पर जोर देना चाहिए।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि कई विकसित देश हैं जिनके पास संपत्ति तो है लेकिन पर्याप्त मानव संसाधन नहीं है। अगर भारत में उपयुक्त कौशल का विकास हो तो देश निकट भविष्य में उन देशों की जरूरतों को पूरा करने की स्थिति में हो सकता है। उन्होंने कहा कि अगर 20वीं सदी ने भारत के अग्रणीय तकनीकी संस्थानों- आईआईटी को वैश्विक नाम अर्जित करते देखा है तो 21वीं शताब्दी के लिए यह अपेक्षित है कि आईटीआई (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) गुणवत्ता युक्त कुशल मानव शक्ति तैयार करने के लिए वैश्विक मान्यता अर्जित करे। प्रधानमंत्री ने युवाओं को नवीनतम प्रौद्योगिकी और उद्योग वातावरण की जानकारी सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों को लगातार अद्यतन करने का भी आह्वान किया।

श्री मोदी ने कहा कि देश में बेरोजगारी और गरीबी का कोई कारण नहीं है। सरकार की सबसे पहली प्राथमिकता रोजगार सृजन है। इसके लिये हमें समुचित ढांचा तैयार करना है और यह मिशन उस दिशा में एक पहल है। उन्होंने कहा कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों ने पिछली सदी में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनायी, अब इस सदी में यही काम करने की बारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'स्किल इंडिया' अभियान गरीबी के खिलाफ सरकार की लड़ाई है। इसके तहत सरकार ने 2022 तक 40.02 करोड़ लोगों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा है।

सरकार की सबसे पहली प्राथमिकता रोजगार सृजन है। इसके लिये हमें समुचित ढांचा तैयार करना है और यह मिशन उस दिशा में एक पहल है। उन्होंने कहा कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों ने पिछली सदी में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनायी, अब इस सदी में यही काम करने की बारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'स्किल इंडिया' अभियान गरीबी के खिलाफ सरकार की लड़ाई है। इसके तहत सरकार ने 2022 तक 40.02 करोड़ लोगों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा है।

उन्होंने कहा कि नीति आधारित रूख के जरिये हमने गरीबी के खिलाफ लड़ाई छेड़ी है और हमें इस युद्ध को जीतना है। हमें गरीबों के बीच से एक सेना तैयार करनी है। हर गरीब मेरा सैनिक है। अपनी क्षमता के साथ हमें यह लड़ाई जीतनी है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 'कौशल ऋण' योजना की भी शुरूआत की जिसके तहत देश में 34 लाख युवाओं को अगले पांच साल में कौशल विकास कार्यक्रमों में भाग लेने वालों को 5,000 से 1.5 लाख रुपये उपलब्ध कराये जाएंगे। श्री मोदी ने इस अवसर पर प्रशिक्षण के लिए कौशल ऋण के स्वीकृति पत्र भी सौंपे।

'विश्व युवा कौशल दिवस' के मौके पर उन्होंने 'स्किल इंडिया' का प्रतीक चिन्ह जारी करने के साथ ही राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन, कौशल विकास तथा उद्यमशीलता, 2015 के लिये राष्ट्रीय नीति, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) की शुरूआत की। प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीब लोग अब भीख मांगने को इच्छुक नहीं है, बल्कि वह आत्म-सम्मान के साथ कमाई करेंगे। स्किल इंडिया पहल केवल जेब भरने के लिये नहीं है, बल्कि यह गरीबों में आत्म-विश्वास का भाव कराएगी। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्रीगण सर्वश्री अरुण जेटली, श्री मनोहर पर्रिकर, श्री राजीव प्रताप रूड़ी, श्री सुरेश प्रभु, श्री अनंत कुमार, श्री जे.पी. नड्डा, श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, श्री अनंत गीते, श्री पीयूष गोयल और श्री थावर चन्द गहलोत उपस्थित थे। ■

पश्चिम बंगाल अपहरण एवं दुर्व्यवहार घटना की जांच हेतु समिति गठित

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल के 24 परगना, मगराहट गांव में चौदह वर्षीय बालिका टुकटुकी मंडल के पुनः अपहरण एवं दुर्व्यवहार की जांच के लिए एक प्रतिनिधि मंडल गठित किया है, जो कि दिनांक 18 जुलाई को घटना स्थल का दौरा करेंगे और जांच के पश्चात पूरी घटना की वस्तु स्थिति से माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष को अवगत करायेंगे। इस प्रतिनिधि मंडल के निम्न सदस्य हैं :

1. सुश्री सरोज पांडे, राष्ट्रीय महामंत्री
2. श्री एम.जे. अकबर, सांसद
3. श्री अर्जुन राम मेघवाल, सांसद

सरकार की उपलब्धियां : नीति आयोग बैठक

ग्रामीण विकास पर नहीं होनी चाहिए राजनीति : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नीति आयोग की संचालन परिषद की 15 जुलाई को नई दिल्ली में आयोजित दूसरी बैठक की अध्यक्षता की। परिषद् ने भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्स्थापन अधिनियम में उचित मुआवजा पाने के अधिकार और पारदर्शिता पर विचार-विमर्श किया। बैठक को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीबी समाप्त करने के लिए केंद्र और राज्यों को साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भूमि अधिग्रहण के बारे में राजनीतिक गतिरोध स्कूलों, अस्पतालों, सड़कों और सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण सहित ग्रामीण विकास को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। उन्होंने कहा कि जहां तक बढ़ा हुआ मुआवजा देने का संबंध है केंद्र और राज्यों के रुख में कोई मतभेद नहीं है।

श्री मोदी ने भूमि अधिग्रहण विधेयक पर राज्यों के साथ विचार-विमर्श के लिए आयोजित नीति आयोग की संचालन परिषद् की दूसरी बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि जहाँ तक क्षतिपूर्ति में बढ़ोतरी का सवाल है इस पर केन्द्र और राज्यों के बीच मतभेद नहीं है। उन्होंने सरकार के दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुये कहा कि राज्यों को टीम इंडिया के तहत विकास की गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। श्री मोदी ने कहा कि मुख्यमंत्री अक्सर केन्द्र से राज्यों के साथ मशविरा कर नीतियाँ बनाने की बात कहते हैं।

श्री मोदी ने भूमि अधिग्रहण विधेयक पर राज्यों के साथ विचार-विमर्श के लिए आयोजित नीति आयोग की संचालन परिषद् की दूसरी बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि जहाँ तक क्षतिपूर्ति में बढ़ोतरी का सवाल है इस पर केन्द्र और राज्यों के बीच मतभेद नहीं है। उन्होंने सरकार के दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुये कहा कि राज्यों को टीम इंडिया के तहत विकास की गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। श्री मोदी ने कहा कि मुख्यमंत्री अक्सर केन्द्र से राज्यों के साथ मशविरा कर नीतियाँ बनाने की बात कहते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक साल के दौरान इस मायने में शुरुआत अच्छी रही है कि योजना बनाने की प्रक्रिया में राज्यों को शामिल किया जा रहा है और राज्यों के मुख्यमंत्री नीति आयोग के उप समूहों का नेतृत्व कर रहे हैं। श्री मोदी ने कहा कि उनकी सरकार बनने के बाद कई राज्यों ने भूमि अधिग्रहण कानून 2013 को लागू करने पर चिंता जतायी थी और कई का मानना था कि इस कानून की वजह से विकास प्रभावित हो रहा है। कुछ मुख्यमंत्रियों ने इस कानून को बदलने का आग्रह किया और इसके लिए पत्र भी भेजे।

श्री मोदी ने कहा कि राज्यों की चिंताओं के मद्देनजर ही भूमि अधिग्रहण अध्यादेश लाया गया और यह सुनिश्चित किया गया कि किसानों को बेहतर क्षतिपूर्ति मिले। प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्रियों से भूमि अधिग्रहण पर बने गतिरोध का राजनीतिक समाधान निकालने की अपील करते हुये कहा कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को बल मिलेगा और किसान समृद्ध होंगे। मुख्यमंत्रियों ने भी अपनी राय रखी। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नीति आयोग की संचालन परिषद के अध्यक्ष हैं और सभी मुख्यमंत्री एवं संघ शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल इसके सदस्य हैं। ■

वैचारिकी : पिछले अंक का शेष

भारतीय जनसंघ ही क्यों ?

– डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी

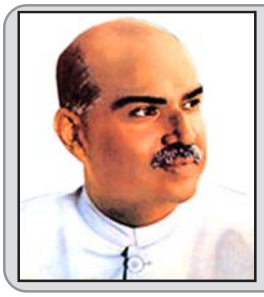

21 अक्टूबर 1951 को नई दिल्ली में भारतीय जनसंघ का प्रथम अधिवेशन हुआ। इस प्रथम अधिवेशन के अवसर पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय जनसंघ की भूमिका पर चर्चा करते हुए कहा कि विरोधी दल के रूप में वे अविवेकपूर्ण विरोध के पक्ष में नहीं हैं, बल्कि ऐसे दृष्टिकोण रखने के पक्षधर हैं, जो प्रजातांत्रिक विकास में सहयोग कर सके। ऐसे दूरदर्शी अभिभाषण का अंतिम भाग हम सुधी पाठकों के लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं :-

काश्मीर

काश्मीर के सम्बन्ध मे जनसंघ का मत है कि यह प्रश्न सयुंक्त राष्ट्र संघ से वापस ले लेना चाहिये तथा मत-संग्रह का भी कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता। काश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है और अन्य रजवाड़ों के समान ही उसको भी समझना चाहिये।

नि:सन्देह यह अत्यन्त ही दु:खद घटना है कि काश्मीर का एक तिहाई भाग अभी भी शत्रु के हाथ में हैं। भावी आक्रमण के विरुद्ध हमारी सरकार द्वारा समय-समय पर की गई घोषणाओं के उपरान्त भी वह इस भू-भाग को विदेशियों के पंजों से मुक्त नहीं कर सकी है।

जो कुछ मैंने कहा है उससे यह स्पष्ट हो गया कि हमारा दल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों के प्रति भारत के गौरव और सम्मान के साथ-साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण रखती है। दूसरे दलों के प्रवक्ताओं, विशेषकर कांग्रेस के अध्यक्ष पं0 नेहरू ने हमारे ऊपर कटु आक्षेप किये हैं। क्योंकि वह भारत के प्रधानमंत्री भी है अत: उनके उद्‌गारों का एक विशेष प्रभाव होता है। उनकी बार-बार की कटु आलोचना ने हमारे निश्चय को बल दिया है। धमकियों और गालियों के सामने हम झुकने वाले नहीं। हम तो ऐसा मानते हैं कि इससे हमारा व्यापक प्रचार ही हुआ है और इसके लिये हम उनको धन्यवाद देते हैं।

प्रत्येक को अधिकार है कि दूसरे दलों के कार्यक्रमों की स्पष्टता और स्वतन्त्रतापूर्वक आलोचना करे किन्तु आलोचना में सत्य का गला घोंटना उचित नहीं। हमारे विरुद्ध मुख्य आक्षेप यह है कि हमारा दकियानूसी विचारों का एक साम्प्रदायिक संगठन है। किसी भी विचारशील व्यक्ति को हमारे कार्यक्रम पर साधारण दृष्टिपात करने पर ही यह पता चल जावेगा कि यह आक्षेप सर्वथा असत्य हैं। वास्तव में तो साम्प्रदायिकता को प्रश्रय देने का आरोप कांग्रेस पर और विशेषकर पं0 नेहरू पर लागू होता है। अपने विगत 30 वर्षों के कारनामों पर उन्हें शांतिपूर्वक विचार करना चाहिए। हर कदम पर जब उन्हें मुस्लिम लीग की अड़ंगेबाजी का सामना करना पड़ा तो उन्होंने मोर्चे से मुंह मोड़ा और अन्त में मातृ-भूमि का विभाजन कर घुटने टेक दिए। हिन्दू मुस्लिम आधार पर काश्मीर विभाजन के डाक्टर अम्बेदकर के प्रस्ताव पर बहुत से लोग स्तम्भित रह गए। हम उसे भी पसंद नहीं करते। इस ढंग से कोई झगड़ा शांत नही होता बल्कि पाकिस्तान को नई मांगें रखने का अवसर मिलता है। यही मुस्लिम लीग का पुराना पैंतरा है।

यह सही है कि हममें से कुछ लोगों ने बंगाल तथा पंजाब के विभाजन का समर्थन किया। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि, जब भारत का विभाजन सर पर आ गया तो हम इसके लिए विवश कर दिए गए। हमारी सदैव यही इच्छा रही कि ये प्रांत अखण्ड भारत के अन्तर्गत रहें किन्तु जब हमें यह पता लगा कि कांग्रेस के विश्वासघात तथा उसके और मुस्लिम लीग के बीच हुए समझौते, जिसे ब्रिटिश कूटनीति का समर्थन प्राप्त था, के द्वारा यह संभव नहीं था, हम लोग आतुर हो गए कि इन प्रांतों का जितना भाग बचे स्वतंत्र भारत में बचा लिया जाए अन्यथा वे पूरे के पूरे भारत के हाथ से निकल जाते। यदि भारत का विभाजन न हुआ होता तो इन प्रांतों के बंटवारे का, जिनके निवासियों ने भारत की मुक्ति के लिए बड़े बलिदान किए हैं, कोई कारण नहीं था। मुस्लिम साम्प्रदायिकता की बेदी पर निरंतर भारतीय राष्ट्रीयता की बलि चढ़ाकर तथा विभाजन के उपरांत भी पाकिस्तान सरकार की सनकों तथा थोथी धमकियों के सामने सर झुकाकर पं0 नेहरू को यह शोभा नहीं देता कि दूसरों पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाएं।

पं0 नेहरू तथा उनके मित्रों द्वारा आगामी चुनावों में मुसलमानों के मत प्राप्त करने के हेतु से अपनायी गयी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को छोड़कर भारत में कहीं सांप्रदायिकता नहीं है। सच में तो देश में प्रांतीयता तथा विभिन्न प्रकार के वर्गों और जातियों के भेदभाव बढ़ रहे हैं। हम मिलकर इन बुराइयों को दूर करें तथा सच्चे प्रजातंत्रीय भारत की नींव डालें। पं0 नेहरू ने साम्प्रदायिकता का जो भूत खड़ा किया है वह देश का ध्यान उसकी वास्तविक समस्याओं से हटाने के लिए ही है। स्पष्ट है कि आज देश की समस्याओं का संबंध भूख से, दरिद्रता से, शोषण से, कुशासन से, भ्रष्टाचार से तथा पाकिस्तान के प्रति आत्म-समर्पण से है। इन बुराइयों के लिए कांग्रेस व उसकी सरकार ही जिम्मेदार है। भारत के सबसे बड़े तानाशाह पं0 नेहरू दूसरों पर फासिज्म का आरोप लगाते हैं। लोगों की आंखों में धूल झोंकने के इन प्रयत्नों पर पानी फिर जाएगा। हमारा विश्वास है कि, इस नवीन दल के जन्म से आशा, शांति तथा शक्ति का एक नया युग आरम्भ होगा, हमारा लक्ष्य और उद्देश्य सही है। किन्तु हमारी सफलता इस पर निर्भर करेगी कि हम अपना संगठन कितना बढ़ाते हैं तथा जनता का कितना विश्वास सम्पादन कर पाते हैं। इसमें समय और अथक परिश्रम लगेगा। आगामी आम चुनाव से हमें अभिभूत होने की आवश्यकता नहीं हैं। निःसन्देह हम उसका हिम्मत से सामना करेंगे और जहां सम्भव होगा मतदाताओं के सम्मुख अपना दृष्टिकोण रखते हुए उनके मत प्राप्त कर उनके विश्वासभाजन बनने का यत्न करेंगे। फिर भी यदि प्रमुख विरोधी दलों में चुनाव समझौता हो गया तो कांग्रेस की पराजय की बहुत अधिक सम्भावना है। इस समझौते का मुख्य आधार लोकप्रियता तथा मतदाताओं का विश्वास ही होना चाहिए। कांग्रेस ने विपुल चुनाव कोष एकत्र किया है तथा समाज के विभिन्न वर्गों के ऊपर कांग्रेस का समर्थन करने के लिए सब प्रकार का दबाव डाला जा रहा है। उसके पास शासन-सत्ता की शक्ति भी है और इस बात की बहुत अधिक सम्भावना है कि वह शासन-तंत्र का भी चुनाव जीतने में उपयोग करने से नही हिचकिचाएगा। हाल के दिल्ली के चुनावों के अनुभव से हम कह सकते हैं कि हमें भय है कि भविष्य में चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष न होंगे। जिस रूप में शासन तंत्र का कांग्रेस और सरकार दोनों पर्यायवाची शब्द हो गए हैं। राज्य-शक्ति का इस प्रकार दुरूपयोग अस्वस्थ परंपराएं निर्माण करता है। अतः सब विरोधी दलों को संयुक्त ढंग से मांग करनी चाहिए कि निष्पक्ष चुनावों की आवश्यकता का निरपवाद रूप से पालन किया जाय। दिल्ली के चुनावों से भी, जहां कांग्रेस विजयी हुई है, कुछ अजीब परिणाम निकलते हैं। कुल मतदाताओं में से 30 प्रतिशत ने कांग्रेस को मत दिए। स्पष्टतः जनता का बहुमत कांग्रेस का विरोधी है। यह तो भारत की राजधानी में हाल रहा है और वह भी तब जबकि कांग्रेस को जीताने के लिए प्रधानमंत्री ने जमीन आसमान एक कर दिया। यदि मैदान में बहुत से प्रतियोगी न होते-और कांग्रेस ने कई जगहों पर गैर-कांग्रेसी स्वतंत्र उम्मीदवार को खड़ा किया-तो बहुमत कांग्रेस के विरुद्ध अपना निर्णय देता और उसे करारी हार खानी पड़ती। जो भी हो, जनसंघ ने, जिसको बने अभी मुश्किल से दो महीने हुए हैं, 24 प्रतिशत मत प्राप्त किये तथा कई जगह तो कांग्रेस तथा जनसंघ के उम्मीदवारों के मतों में बहुत थोड़ा अन्तर रहा। सबसे मार्के की बात तो यह है कि जहां कांग्रेस के उम्मीदवार की जमानत तक जब्त हो गयी जनसंघ का कोई ऐसा उम्मीदवार न रहा जो जनता का इतना समर्थन प्राप्त न कर सका हो। यह कोई छोटी बात नहीं है। हमारे कार्यकर्ताओं को ध्येय की सत्यता तथा देश के विभिन्न भागों में प्राप्त समर्थन में पूरा विश्वास रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए। पूर्ण निष्ठा, आशा तथा हिम्मत के साथ हम अपनी यात्रा आरम्भ कर रहे हैं।

आह्वान

हमारे कार्यकर्ता सदैव स्मरण रखें, सेवा तथा त्याग के बल पर ही वे जनता का विश्वास सम्पादन कर सकते हैं। भारत के पुनरूज्जीवन एवं पुनःनिर्माण कार्य हमारी बाट जोह रहा है। मां अपने पुत्रों को पुकार रही है। वर्ग, जाति तथा सम्प्रदाय के भेदों को भूलकर हम उसकी सेवा में जुट जाएं। वर्तमान चाहे कितना भी अन्धकारमय क्यों न हो, भविष्य उज्ज्वल तथा महान है और भारत को विश्व में बड़े कार्य करने हैं। हमारा संगठन, जिसका प्रतीक मृत्तिका प्रदीप है, आशा तथा एकता, निष्ठा तथा साहस की इस ज्योति को लेकर उस अंधकार को छिन्न-विच्छिन करने का यत्न करें जिसने आज हमारे राष्ट्र को आच्छादित कर रखा है। यह यात्रा का आरम्भ मात्र है। परमात्मा इसे शक्ति तथा साहस दे कि हम सदैव सत्-पथ पर चल सकें, भय हमें आक्रांत न कर सके और आकर्षण हमें लुभा न सके और हम भारत को आध्यात्मिक तथा भौतिक दृष्टि से महान और बलवान बनाने में योग दे सकें जिससे वह विश्व शान्ति तथा समृद्धि की रक्षा का सूक्ष्म तथा पवित्र साधन सिद्ध हो। ■

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह जी नहीं रहे

(जन्म 18 अक्टूबर 1923-मृत्यु 4 जुलाई 2015)

राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर के प्रचारक रहे श्री सोहनसिंह का 4 जुलाई 2015 को 93 वर्ष की आयु में केशवकुंज झंडेवाला, दिल्ली में रात्रि 11.40 बजे स्वर्गवास हो गया। उनका अंतिम संस्कार 5 जुलाई को उनके हजारों प्रशंसकों की उपस्थिति में दिल्ली के निगम बोध घाट पर किया गया। उन्होंने अपने आदर्शवादी, ध्येयनिष्ठ व कर्मठ जीवन से हजारों स्वयंसेवकों को प्रेरणा देकर राष्ट्र कार्य करने के लिए प्रेरित किया। राजस्थान में करीब 20 साल तक एक तपस्वी का जीवन जीने वाले सोहन सिंह को प्रदेश में संघ कार्य को युद्ध गति से विस्तार देने वाले योद्धा प्रचारक के रूप में जाना जाता है। जब वे राजस्थान आए थे तब यहां मात्र 500 शाखाएं थीं। उन्होंने प्राण-प्रण प्रयास करके उसे दुगुना कर दिया। हर जिले, हर तहसील और कस्बे में उन्होंने समर्थ और सक्षम कार्यकर्ताओं की टोली तैयार की। वे कठोर जीवन जीने वाले कार्यकर्ता हैं।

श्री सोहन सिंह का जन्म 18 अक्टूबर, 1923 गुरुवार को ग्राम-हर्चना, जिला बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह परिवार में तीन भाई व तीन बहनों में सबसे छोटे थे। सन् 1942 में बीएससी अन्तिम वर्ष की परीक्षा देने के पश्चात् वायुसेना में अधिकारी के पद पर उनका चयन हो गया था, लेकिन सेना की नौकरी में नहीं जाकर वर्ष 1943 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। उन्होंने वर्ष 1943, 1944 व 1945 में क्रमशः प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष (मेरठ) व तृतीय वर्ष का संघ का शिक्षण प्राप्त किया।

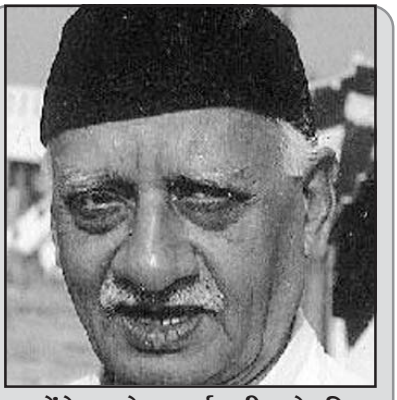

उन्होंने अपने आदर्शवादी, ध्येयनिष्ठ व कर्मठ जीवन से हजारों स्वयंसेवकों को प्रेरणा देकर राष्ट्र कार्य करने के लिए प्रेरित किया। राजस्थान में करीब 20 साल तक एक तपस्वी का जीवन जीने वाले सोहन सिंह को प्रदेश में संघ कार्य को युद्ध गति से विस्तार देने वाले योद्धा प्रचारक के रूप में जाना जाता है।

प्रारम्भ में वर्ष 1943 से 1948 तक करनाल, रोहतक, झझर, अम्बाला छावनी में तहसील प्रचारक रहे। वर्ष 1949-1956 तक करनाल जिला प्रचारक, वर्ष 1957-1963 तक हरियाणा संभाग प्रचारक, 1963-1970 तक दिल्ली संभाग प्रचारक, वर्ष 1970-1973 तक पुनः हरियाणा संभाग प्रचारक, वर्ष 1973-77 तक जयपुर विभाग प्रचारक, वर्ष 1977-1987 तक राजस्थान (संयुक्त) प्रान्त प्रचारक, वर्ष 1987-96 सह क्षेत्र प्रचारक व क्षेत्र प्रचारक उत्तर क्षेत्र, वर्ष 1996-2000 तक अखिल भारतीय धर्म जागरण प्रमुख, वर्ष 2000-2004 तक उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख रहे। वर्ष 2004 के बाद स्वास्थ्य लाभ हेतु दायित्व मुक्त रहे।

सोहन सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने कहा कि दुनिया में सदैव के लिए कोई नहीं आता। भगवान को भी जाना पड़ता है। कुछ लोग आते हैं और जीवन कैसा जीना बताते हैं। जीवन में कैसे चलना यह उन्होंने हमें सिखाया। सोहन सिंह जी का स्वयंसेवकों के साथ परिवार जैसा संबंध था। कार्यकर्ताओं के बारे में जाँच पड़ताल करवाने वालों में से एक थे। उनके जाने से रिक्तता पैदा हुई है लेकिन ऐसे लोगों के प्रति उनका स्मरण और आगे चलने के लिए रखे। उन्होंने बड़ा होने के लिए कुछ नहीं किया। श्री भागवत ने कहा कि वे सहज और स्वाभाविक रूप से रहे। उनके मन में कभी भी अहंकार का भाव नहीं आया। उनसे संपूर्ण समर्पण हमें सीखना चाहिए। संघ के कार्यकर्ता को कैसा होना चाहिए, व्यवहार कैसा होना चाहिए यह भी हमें सीखना चाहिए। उनके जीवन को अपने आचरण से जीवित रखना है। अपने जीवन से उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। उस परम्परा को आगे बढ़ाना है, उन्हें ज्यादा आनंद मिलेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने श्रद्धांजलि के तौर पर संदेश भेजा। संदेश में कहा गया कि सोहन सिंह जी अपने जीवन में आचार संहिता के पालन में उंच-नीच नहीं होने दी। ऐसे व्यक्तित्व का चला जाना खालीपन का अहसास कराता रहेगा। ■

साक्षात्कार

भाजपा प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी संख्या का इतिहास लिखेगी : मुरलीधर राव

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री मुरलीधर राव पार्टी के ऊर्जावान युवा नेताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्री राव प्रारम्भिक युवावस्था से ही रा.स्व.सं. के साथ संपर्क में आए और छात्र राजनीति में प्रवेश किया तथा वारंगल एवं हैदराबाद में अ.भा.वि. परिषद का नेतृत्व किया। वह 1984 में उस्मानिया विद्यार्थी छात्रसंघ के महासचिव बने । उन्होंने स्वदेशी जागरण मंच में कई जिम्मेदारियां निभाई तथा बाद में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव का प्रभार संभालने से पूर्व उसके राष्ट्रीय सचिव रहे। वह संगठनात्मक मामलों में अपनी स्पष्टवादिता और कुशल नेतृत्व के लिए मशहूर रहे हैं तथा उन्होंने बड़ी कुशलता से पार्टी के कार्यों के सम्बन्ध में चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है।

'कमल संदेश' के सम्पादकीय मंडल सदस्य श्री राम प्रसाद त्रिपाठी के साथ एक साक्षात्कार में श्री मुरलीधर राव ने वर्तमान 'सम्पर्क महा अभियान' के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के बाद संगठन की उपलब्धियों का विवरण दिया। श्री राव इस समय प्रशिक्षण अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं और उनका विश्वास है कि वर्तमान अभियान पूरा करने के बाद भाजपा पार्टी के प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी संख्या होने का एक और इतिहास लिखेगी। प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं:

– भाजपा विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है जिसके पास 11 करोड़ से अधिक सदस्य संख्या है। राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान के दौरान कई अनेक नए सदस्य पार्टी में शामिल हुए। अब संगठन इन नए सदस्यों को महा अभियान के माध्यम से प्रशिक्षित करने की योजना बना रहा है। क्या आप इस कार्यक्रम पर थोड़ा-बहुत बता सकते हैं तथा इसके उद्देश्य क्या हैं?

राष्ट्रव्यापी भाजपा सदस्यता अभियान आरम्भ करने से पूर्व संगठन ने त्रिस्तरीय रणनीति तैयार की अर्थात् सदस्यता महा अभियान, सम्पर्क महा अभियान और प्रशिक्षण महा अभियान ताकि सदस्यता अभियान पूरी तरह सफल हो सके। 'सदस्यता महा अभियान' के दौरान पार्टी के समर्थकों ने स्वयं को रजिस्टर कराने की टेक्नालॉजी का लाभ उठाया। अगला कार्यक्रम 'सम्पर्क महा अभियान' है जो अभी चल रहा है और इस दौरान पार्टी इन नए सदस्यों के पास पहुंच रही है और उन्हें पार्टी के साथ सम्बद्ध कर रही है। इस शृंखला में आखिरी तथा विशेष महत्वपूर्ण बात 'प्रशिक्षण महा अभियान' है और पूरे कार्यक्रम की सफलता इसी पर निर्भर है। मैं कहना चाहूंगा कि यह पूरे अभियान का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है और इसी से पूरा परिदृश्य बदल जायेगा।

काडर या कार्यकर्ता आधारित पार्टी होने के नाते संगठन की वास्तविक शक्ति, कार्यकर्ता प्रशिक्षण अत्यंत महत्व रखती है और निर्णायक भी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए 15 लाख से अधिक कार्यकर्ता इस संगठन को बूथ स्तर से केन्द्रीय स्तर तक पार्टी संगठन के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा तथा पार्टी के इतिहास, विचारधारा, दर्शन, कार्यशैली, निर्णय लेने तथा विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाएगा। संगठन का विश्वास है कि कार्यकर्ता प्रशिक्षण के माध्यम से ही

हम उन्हें सभी विषयों पर प्रशिक्षण दे सकेंगे और फिर ये कार्यकर्ता देश भर में इसका प्रचार-प्रसार कर सकेंगे। अंतिम बात यह है कि प्रत्येक कार्यकर्ता को प्रशिक्षित करना अत्यंत महत्पूर्ण है ताकि वे राष्ट्र-निर्माण में अपना योगदान दे सकें तथा अपने-अपने क्षेत्रों को कहीं अधिक बेहतर और कुशल ढंग से पार्टी का नेतृत्व कर सकें।

- संगठन ने सदस्यों को प्रशिक्षित करने की योजना क्यों बनाई तथा इस बड़ी कवायद के पीछे क्या औचित्य है?

कार्यकर्ता की उत्कृष्टता ही पार्टी की उत्कृष्टता बनने जा रही है। यदि भाजपा को एक अलग किस्म की पार्टी बनना है तो इसमें कौन सा अंतर दिखाई पड़ना चाहिए? यह अंतर कार्यकर्ता की उत्कृष्टता में निहित होता है और इसे उसके समर्पण भाव में देखा जा सकता है। इस उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए कार्यकर्ताओं की क्षमता में विस्तार, उनकी समझ में विस्तार, उनकी परिपक्वता को सुदृढ़ बनाना तथा उन्हें ऐसे विचार देना है जिसमें वे चुनौतियों का सामना कर सकें जिसके लिए प्रशिक्षण सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। परिणामस्वरूप, सुशिक्षित कार्यकर्ताओं के संगठन का निर्माण करने के लिए इस पूरे अभियान के पीछे यही सिद्धांत निहित हैं।

- इस महा अभियान के अनुसार पार्टी ने 15 लाख सक्रिय सदस्यों के प्रशिक्षण की योजना बनाई है। इस विशाल अभियान को किस प्रकार पूरा किया जाएगा और इसका रोडमैप क्या है?

'प्रशिक्षण महा अभियान' चार चरणों में काम करेगा। योजना के अनुसार देश के 11000 मण्डलों में पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिविर लगाए जाएंगे। दूसरे चरण में जिला स्तरीय शिविर होंगे जिसमें 650 जिलों को शामिल किया जाएगा। राज्य स्तरीय शिविर में तीन चरण होंगे और 35 या इससे अधिक ऐसे राज्य स्तरीय शिविर आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक शिविर में अधिक से अधिक 150 व्यक्ति होंगे। यदि सदस्यों की संख्या 150 से बढ़ जाती है तो और अधिक शिविर लगाए जा सकते हैं। और अंतत: हम ये शिविर राष्ट्रीय स्तर पर लगाएंगे। यह प्रशिक्षण का रोड़मैप है।

'प्रशिक्षण महा अभियान' चार ढांचों में काम करेगा। योजना के अनुसार देश के 11000 मण्डलों में पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं प्रशिक्षण शिविर लगाए जाएंगे। दूसरे चरण में जिला स्तरीय शिविर होंगे जिसमें 650 जिलों को शामिल किया जाएगा। राज्य स्तरीय शिविर में तीन चरण होंगे और 35 या इससे अधिक ऐसे राज्य स्तरीय शिविर आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक शिविर में अधिक से अधिक 150 व्यक्ति होंगे। यदि सदस्यों की संख्या 150 से बढ़ जाती है तो और अधिक शिविर लगाए जा सकते हैं।

- क्या आप 'प्रशिक्षण महा अभियान' के संगठनात्मक ढांचे पर विस्तार से बता सकते हैं?

प्रशिक्षण महा अभियान से सम्बन्धित संगठनात्मक मुद्दों पर कार्य करने के लिए व्यापक व्यवस्था करने के लिए प्रशिक्षकों की पहचान और उनका प्रशिक्षण आवश्यक है तथा इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की एक केन्द्रीय टीम गठित की है। यह पिछले पांच महीनों से चौबीसों घण्टे कार्य कर रही है। इसी प्रकार की टीमें प्रत्येक राज्य, जिला, और मण्डल स्तर पर भी बनाई जाएंगी। प्रत्येक वर्ग के लिए एक वर्ग प्रमुख होगा जो रोजमर्रा के विषयों को देखेगा और केन्द्र को अपनी रिपोर्ट देगा।

- नए कार्यकर्ताओं के लिए जिस प्रशिक्षण की कल्पना की गई है, क्या वह भाजपा की विचारधारा को उत्पन्न करने के लिए की गई है या उन्हें सुशासन तथा राजनीति सम्बन्धी विषयों में प्रशिक्षित करने की मंशा से की गई है? क्या आप प्रशिक्षण प्रकार पर कुछ प्रकाश डाल सकेंगे?

इस प्रशिक्षण की पूरी कवायद के पीछे मुख्य विचार यह है कि नए तथा पुराने कार्यकर्ताओं में संगठन की विचारधारा, आदर्शों और मूल्यों को जमीनी स्तर के सभी कार्यकर्ताओं तक पहुंचाया। इसके अलावा हम उन्हें पार्टी के इतिहास, 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद', 'एकात्म मानववाद', 'पंच निष्ठाएं' आदि के बारे में प्रशिक्षित भी करेंगे तथा साथ ही साथ पार्टी की कार्यसंस्कृति, अन्य मुद्दे और राष्ट्र के सामने चुनौतियों, पार्टी की निर्णय क्षमता, संगठनात्मक कार्य की सत्ता, मीडिया और सामाजिक मीडिया प्रबंधन आदि के बारे में भी

प्रशिक्षण के अंतर्गत बताएंगे।

– हाल ही में नई दिल्ली में श्री अमित शाह की अध्यक्षता में 'प्रशिक्षण महा अभियान' कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसका उद्देश्य तथा संदेश क्या था?

चार चरणों वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हमें अपने नए कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए बड़े पैमाने पर अच्छे प्रशिक्षकों की आवश्यकता है। अत:, हमने देशभर में लगभग 250 प्रशिक्षकों के लिए तीन दिन का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर लगाया। इस प्रकार पहली अगस्त से राज्य स्तर पर एक दिन का प्रशिक्षण शिविर लगाया जाएगा और बाद में हम जिला स्तर पर प्रशिक्षण शिविर लगाएंगे, जो इसके बाद मण्डल स्तर पर कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करेंगे।

– राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान के दौरान पहली बार पार्टी ने नए सदस्यों के प्रवेश के लिए आधुनिक टेक्नालॉजी का प्रयोग किया। क्या आप 'प्रशिक्षण महा अभियान' के बारे में भी मार्डन टेक्नालॉजी का प्रयोग करेंगे?

निश्चित ही। चार महीनों में हमें कम से कम पार्टी के 15 लाख कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना होगा और यह बहुत बड़ी चुनौती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पहले तो हम कार्यकर्ताओं की सूची तैयार कर रहे हैं जो मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेंगे। हम अपने रिकार्ड के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता का फोटोग्राफ और अन्य ब्यौरे रखेंगे और पार्टी के लिए डाटाबेस तैयार करेंगे। इसके लिए टेक्नालॉजी का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। नए कार्यकर्ताओं के सामने प्रभावी ढंग से हर मुद्दे को रखने और समझने के लिए हम पूरी तरह से 'नालेज टूल्स' और 'टेक्नॉलॉजी टूल्स' का इस्तेमाल करेंगे जिसके लिए डाक्युमेंट्री तथा प्रदर्शनी लगाई जाएंगी। अत: 'प्रशिक्षण महा अभियान' को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए हम सभी प्रकार के आधुनिक टेक्नालॉजी का प्रयोग करेंगे। इस गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम के पूरा होने पर भाजपा राजनैतिक संचार और कार्यकर्ता प्रशिक्षण में नए मानदण्ड निर्धारित कर देगी। अभी तक किसी भी अन्य पार्टी ने इतने बड़े परिमाण पर काम नहीं किया है।

निश्चित ही चार महीनों में हमें कम से कम पार्टी के 15 लाख कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना होगा और यह बहुत बड़ी चुनौती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पहले तो हम कार्यकर्ताओं की सूची तैयार कर रहे हैं जो मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेंगे। हम अपने रिकार्ड के लिए प्रत्येक कार्यकर्ताओं का फोटोग्राफ और अन्य ब्यौरे रखेंगे और पार्टी के लिए डाटाबेस तैयार करेंगे। इसके लिए टेक्नालॉजी का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

– क्या इस वृहत 'प्रशिक्षण महा अभियान' को पूरा करने के लिए कोई लक्ष्य निर्धारित किया है?

हां, हमने डेडलाइन तय की है। यह तारीख होगी 1 अगस्त 2015। उस समय तक कार्यक्रम का प्रारम्भ हो जाएगा और चार महीनों में अर्थात् नवम्बर के अंत तक इस कार्यक्रम का समापन होना आवश्यक होगा।

– अभी तक आपको इस 'प्रशिक्षण महा अभियान' में कितना रिस्पांस मिला है?

कार्यकर्ता प्रशिक्षण महा अभियान के बारे में बहुत उत्सुक हैं। वे पार्टी के बारे में सब कुछ जान लेने के बाद ही, हर पहलू समझ लेने के बाद ही काम करना चाहते हैं। मेरा विश्वास है कि हमारे कार्यकर्ताओं का उत्साह बताता है कि उनमें भारी उत्साह है। परन्तु हमें संगठन और देश के लिए समर्पित तथा प्रतिबद्ध कार्यकर्ता तैयार करने हैं। अत: इस उद्देश्य को सामने रखते हुए और इससे भी अधिक कार्यकर्ताओं की रुचि को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या तैयार करनी होगी। कार्यकर्ता जानते हैं कि वर्तमान अभियान एक बहुत बड़ा कार्यक्रम है जिसका लक्ष्य किसी राजनैतिक पार्टी द्वारा लक्ष्य कार्यकर्ताओं को बड़ी भारी संख्या में प्रशिक्षित करना है और बहुत स्वाभाविक है कि वे इस ऐतिहासिक अभियान का हिस्सा बनने के लिए बहुत उत्सुक हैं। अंतिम तथा अत्यंत महत्वपूर्ण बात है कि प्रशिक्षण महा अभियान की समाप्ति पर भाजपा एक और इतिहास रचेगी जिसमें उसके पास प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी संख्या होगी। अत: बड़ी भारी संख्या में लोगों का उत्साह हमारे सामने है। ■

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सफल मध्य एशिया यात्रा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 6 से 13 जुलाई के दौरान रूस समेत मध्य एशिया के छह देशों की सफल यात्रा की। 8 दिवसीय यह यात्रा उज्बेकिस्तान से शुरू होकर कजाकिस्तान, रूस, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिजस्तान और ताजिकिस्तान में समाप्त हुई। प्रधानमंत्री की इस यात्रा ने भारत और मध्य एशिया के संबंधों को नई उचाईयां प्रदान की। तेल और खनिज से समृद्ध इन देशों के साथ आपसी संबंधों की मजबूती के अलावा रक्षा, व्यापार, सैन्य सहयोग, यूरेनियम आपूर्ति, आतंकवाद समेत कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहमति बनी। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने रूस स्थित उफा में ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे उच्च स्तरीय सम्मेलनों में भाग लिया। इस यात्रा की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी थी कि शंघाई सहयोग संगठन में भारत की पूर्ण सदस्यता को स्वीकृति दी।

उज्बेकिस्तानः
परमाणु ऊर्जा, रक्षा और व्यापार में सहयोग

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी मध्य एशिया एवं रूस की आठ दिवसीय यात्रा के पहले चरण में 6 जुलाई को दो दिवसीय यात्रा पर उज्बेकिस्तान पहुंचे। श्री मोदी ने ताशकंद में उज्बेक राष्ट्रपति श्री इस्लाम करीमोव से द्विपक्षीय और अफगानिस्तान सहित महत्वपूर्ण क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की। वार्ता के दौरान भारत और उज्बेकिस्तान ने परमाणु ऊर्जा, रक्षा और व्यापार समेत महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने का निर्णय किया गया।

प्रधानमंत्री ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि वे महान विभूति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर उन्हें नमन करते हैं। इस अवसर पर जारी संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। वे राष्ट्र को बहुमूल्य योगदान देने वाले महान नेता के रूप में हमेशा याद किए जाएंगे। उन्होंने युवाओं की शिक्षा पर भी विशेष बल दिया था। वे एक महान राजनेता, भविष्य दृष्टा और सशक्त विचारक थे, जिनके सिद्धांतों की हमेशा सराहना की गई।

प्रधानमंत्री श्री मोदी और राष्ट्रपति श्री करीमोव के बीच चर्चा के दौरान दोनों देशों ने 'विस्तारित पड़ोस' में बढ़ते आतंकवाद पर साझा चिंता व्यक्त की।

बातचीत के बाद दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग के तीन समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिनमें विदेश कार्यालय, संस्कृति और पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए समझौता शामिल है। श्री मोदी और श्री करीमोव के बीच हुई बातचीत के दौरान सामरिक, आर्थिक और ऊर्जा क्षेत्रों में संबंधों को बेहतर बनाने के अलावा अफगानिस्तान

की स्थिति सहित कई क्षेत्रीय मुद्दों की समीक्षा की गई।

संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि मैंने उज्बेकिस्तान से अपनी यात्रा शुरू की है जो भारत के लिए इस देश के महत्व को दर्शाता है, न केवल इस क्षेत्र के लिए, बल्कि पूरे एशिया के लिए। राष्ट्रपति करीमोव और मैंने भारत और उज्बेकिस्तान के बीच कनेक्टिविटी को और बढ़ाने की विभिन्न पहलों पर चर्चा की। श्री मोदी ने कहा कि अफगानिस्तान की स्थिति सहित अंतरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की गई और इस देश में शांति एवं स्थिरता के महत्व को दोहराया। इस संदर्भ में श्री मोदी ने कहा कि हमने दोनों देशों के विस्तारित पड़ोस में बढ़ते उग्रवाद और आतंकवाद के खतरों के बारे में चिंताओं को साझा किया।

भारत-कजाकिस्तान के बीच 5 समझौतों पर हस्ताक्षर

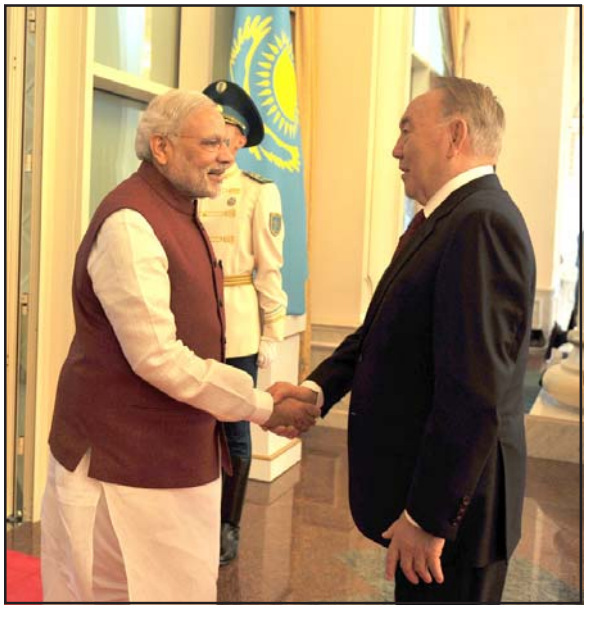

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी मध्य एशिया की इस यात्रा के दूसरे चरण में कजाकिस्तान पहुंचे। भारत और कजाकिस्तान के बीच 5 महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किये गए। इनमें सैन्य सहयोग बढ़ाने के लिए रक्षा समझौता और यूरेनियम की आपूर्ति का अनुबंध शामिल है। दोनों देशों के बीच ये समझौते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और कजाख राष्ट्रपति श्री नूरसुल्तान नजरबायेव के बीच बातचीत के बाद हुए, जिसमें इन्होंने आतंकवाद और चरमपंथ के खिलाफ लड़ाई में सक्रियता से सहयोग करने का फैसला किया। श्री नजरबायेव के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि दोनों देशों के बीच सामरिक गठजोड़ रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग का महत्वपूर्ण आयाम है। उन्होंने कहा कि हम दोनों इसे मजबूत बनाना चाहते हैं। हम रक्षा सहयोग के क्षेत्र में नये सहमति पत्र का स्वागत करते हैं। इस सहमति पत्र से द्विपक्षीय रक्षा सहयोग का दायरा और व्यापक होगा, जिसमें नियमित आदान-प्रदान यात्राएं, विचार-विमर्श, सैन्य कर्मियों का प्रशिक्षण, सैन्य तकनीकी सहयोग, संयुक्त अभ्यास, संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा अभियानों में सहयोग, विशेष बलों का आदान-प्रदान आदि शामिल हैं। श्री मोदी ने एनसी 'काजएटमप्रोम' जेएससी और एनपीसीआईएल के बीच अनुबंध पर हस्ताक्षर किये जाने का स्वागत किया जो भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक यूरेनियम की आपूर्ति से संबंधित है। उन्होंने कहा कि कजाकिस्तान उन पहले देशों में शामिल है, जिसके साथ हमने यूरेनियम की खरीद के अनुबंध के जरिये असैन्य परमाणु सहयोग किया है।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल हुए मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 8 जुलाई को 3 दिवसीय दौरे पर रूस के उफा शहर पहुंचे। यहां उन्होंने रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने योग दिवस मनाने के लिए रूस का धन्यवाद किया। उफा पहुंचने पर श्री मोदी ने कहा कि रूस आना विशेष बात है। रूस एक ऐसा देश है जिसके साथ भारत की मित्रता हमेशा से जानी जाती है। रूस प्रवास के दौरान श्री मोदी पांच देशों के संगठन ब्रिक्स के शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। इस सम्मेलन में आर्थिक और सुरक्षा सहयोग पर विशेष जोर रहा। सम्मेलन में शंघाई सहयोग संगठन ने भारत को पूर्ण सदस्यता प्रदान करने का फैसला किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उफा में आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन में कहा कि सभी देश एक जैसी समस्या से जूझ रहे हैं। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स के देश आपस में सहयोग बढ़ाएं। सम्मेलन में बोलते हुए श्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र और सुरक्षा परिषद में सुधार की बात कही। उन्होंने कहा कि इस सुधार से हम सभी समस्याओं से बेहतर तरीके से निपट सकते हैं। साथ ही प्रधानमंत्री ने सभी ब्रिक्स देशों का योग दिवस पर समर्थन के लिए आभार जताया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के साथ बयान देते हुए रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि ब्रिक्स देश ड्रग्स तस्करी और पाइरेसी के खिलाफ मिलकर लड़ेंगे। उन्होंने

अगले वर्ष 2016 में होने वाले जी-20 सम्मेलन की अध्यक्षता करने वाले चीन को समर्थन की बात कही।

ब्रिक्स सम्मेलन में विकास बैंक का शुभारंभ

ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान विकास बैंक का शुभारंभ हुआ। यह विकास बैंक मुख्य रूप से ब्रिक्स के सदस्य देशों, ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका में ढांचागत परियोजनाओं के लिए ऋण उपलब्ध कराएगा। यह बैंक साल के अंत तक निवेश के लिए अपनी पहली परियोजनाओं का चयन करेगा। प्रसिद्ध भारतीय बैंकर श्री केवी कामत इस बैंक के पहले प्रमुख हैं। न्यू डेवलपमेंट बैंक में शुरुआत में 50 अरब डॉलर की पूंजी होगी जो 10 अरब डॉलर के बराबर बराबर हिस्सों में पांच सदस्य देशों से आएगी।

इसके अलावा ब्रिक्स देश एक मुद्रा पूल भी बना रहे हैं, जिसका मकसद ब्रिक्स के सदस्य देशों में वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में मदद करना है। डॉलर के अभाव के समय इन देशों के केन्द्रीय बैंक इस पूल का इस्तेमाल कर सकेंगे। इस मुद्रा पूल में चीन 41 अरब डॉलर का योगदान देगा जबकि ब्राजील, भारत और रूस प्रत्येक 18 अरब डॉलर प्रदान करेंगे। शेष 5 अरब डॉलर का योगदान दक्षिण अफ्रीका से आएगा।

शंघाई सहयोग संगठन में भारत को सदस्य के रूप में शामिल किया

रूस के उफा में 10 जुलाई को 15वां शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ। शंघाई सहयोग संगठन ने भारत को पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल करने का निर्णय किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आभार व्यक्त करते हुए छह देशों वाले इस संगठन से कनेक्टिविटी बढ़ाने, आतंकवाद से लड़ने और बाधाओं को दूर कर कारोबार अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में काम करने की पेशकश की।

पिछले 10 साल से इस संगठन में पयर्वेक्षक का दर्जा पाया भारत कुछ प्रक्रियाओं को पूरा करने के बाद तकनीकी रूप से अगले साल इसका पूर्ण सदस्य बन जाएगा। एससीओ के अभी चीन, रूस, कजाखस्तान, किर्गिजस्तान, उज्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान सदस्य हैं।

रूस यात्रा के बाद श्री मोदी ने ट्वीट किया कि ब्रिक्स 2015 और एससीओ शिखर सम्मेलनों के दौरान जो कुछ हासिल हुआ, उससे मैं पूरी तरह संतुष्ट हूं। बैठकें और बातचीत फायदेमंद रहीं। श्री मोदी ने एक अन्य ट्वीट में कहा कि मेरे रूस प्रवास के दौरान शानदार मेजबानी के लिए राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन को विशेष रूप से धन्यवाद। शिखर सम्मेलनों से इतर उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से भी मुलाकात की। इस दौरान संबंधों को सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय किये गये।

उफा में भारत-पाक बैठक

शांति और विकास, भारत-पाकिस्तान की सामूहिक जिम्मेदारी

उफा में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन के दौरान 10 जुलाई को पाकिस्तान और भारत के प्रधानमंत्रियों की बैठक हुई। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय और क्षेत्रीय हित से जुड़े मामलों पर विचार-विमर्श किया। दोनो नेताओं ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि शांति सुनिश्चित करना और विकास को प्रोत्साहन देना भारत और पाकिस्तान की सामूहिक जिम्मेदारी है। ऐसा करने के लिए वे सभी लम्बित मामलों पर चर्चा करने को तैयार हैं। दोनों नेताओं ने आतंकवाद के सभी स्वरूपों की निंदा की और दक्षिण एशिया से इस बुराई का सफाया करने के लिए एक-दूसरे से सहयोग करने पर सहमति व्यक्त की। इसके अलावा पाकिस्तानी प्रधानमंत्री श्री नवाज शरीफ ने 2016 में होने वाले दक्षेस सम्मेलन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को पाकिस्तान आने का निमंत्रण दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

भारत-पाक बैठक में निम्न मुद्दों पर बनी सहमति

1. आंतकवाद से जुड़े सभी मामलों पर चर्चा के लिए दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के बीच नयी दिल्ली में बैठक।
2. सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के महानिदेशक एवं पाकिस्तान रेंजर्स के महानिदेशक के बीच और उसके बाद डीजीएमओ की बैठकें जल्द।
3. एक-दूसरे की हिरासत में मौजूद मछुआरों की उनकी नौकाओं सहित रिहाई के बारे में पंद्रह दिन के भीतर फैसला।
4. धार्मिक पर्यटन को सुगम बनाने के लिए व्यवस्था।
5. दोनों पक्षों ने आवाज के नमूने मुहैया कराने जैसी अतिरिक्त सूचना सहित मुम्बई मामले के मुकदमे की सुनवाई में तेजी लाने के तरीकों और साधनों पर विचार करने पर सहमति।

भारत-तुर्कमेनिस्तान के बीच 7 समझौते

तुर्कमेनिस्तान के दौरे पर पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 जुलाई को राजधानी अश्गाबात में प्रतिनिधिमंडल स्तर की बैठक में हिस्सा लिया। इसमें दोनों देशों के बीच रक्षा, पावर और कम्युनिकेशन समेत कई सेक्टर में सहयोग पर सहमति बनी। भारत और तुर्कमेनिस्तान के बीच डिफेंस, फर्टिलाइजर इंडस्ट्री, साइंस और टेक्नोलॉजी, स्पोर्ट्स, टूरिज्म, फार्मा और फॉरेन सर्विस ट्रेनिंग के सेक्टर में सात समझौतों पर हस्ताक्षर हुए हैं। बैठक के बाद दोनों देशों की साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में पीएम मोदी ने कहा कि भारत यहां के पावर सेक्टर में निवेश करेगा। उन्होंने यहां ओएनजीसी का दफ्तर खोलने की भी बात कही।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत गैस पाइपलाइन को दोनों देशों के बीच संबंधों में सबसे अहम पहल बताया। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट के जरिए क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग का स्वरूप बदल जाएगा और इससे समृद्धि आएगी। बैठक में भारत ने तुर्कमेनिस्तान में एक यूरिया कारखाना भी लगाने का प्रस्ताव किया, जिसका वहां के नेताओं ने स्वागत किया। श्री मोदी ने कहा कि मध्य एशिया के साथ भारत के संबंधों को गहरा करने में तुर्कमेनिस्तान को अहम भूमिका निभानी होगी। श्री मोदी ने दक्षिण-मध्य एशिया की स्थिरता और शांति के लिए आतंकवाद और कट्टरता के खिलाफ संघर्ष में सहयोग को जरूरी बताया।

तुर्कमेनिस्तान के साथ हुए प्रमुख समझौते

1. भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड और तुर्कमेन राज्य की कंपनी तुर्कमेनहिमिया के बीच रासायनिक उत्पादों की आपूर्ति पर समझौता।
2. भारत के विदेश मामले मंत्रालय के विदेश सेवा संस्थान और तुर्कमेनिस्तान के विदेश मंत्रालय के अंतर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान के बीच समझौता।
3. भारत के खेल एवं युवा मामले मंत्रालय और तुर्कमेनिस्तान की खेल राज्य समिति के बीच खेल के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता।
4. भारत और तुर्कमेनिस्तान सरकार के बीच 2015-2017 की अवधि के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग कार्यक्रम।
5. भारत और तुर्कमेनिस्तान सरकार के बीच योग और पारंपरिक चिकित्सा क्षेत्र में सहयोग पर समझौता।
6. भारत और तुर्कमेनिस्तान सरकार के बीच पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता।
7. भारत और तुर्कमेनिस्तान के बीच रक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता।

प्रधानमंत्री द्वारा अश्गाबात में योग केन्द्र का उद्घाटन तथा महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अश्गाबात में एक पारंपरिक चिकित्सा और योग केंद्र का उद्घाटन किया। उन्होंने महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण भी किया। इस अवसर पर योग आसन का प्रदर्शन देखने के बाद प्रधानमंत्री ने कहा कि यह उनके लिये अपार खुशी का अवसर है जहां बच्चों ने हिन्दी में उनका अभिवादन किया। महात्मा की प्रतिमा के अनावरण के समय भजन गाया गया और कुछ योग आसनों का इतना सही प्रदर्शन किया गया।

प्रधानमंत्री ने तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रपति श्री गुरबांगुली बरदिमुहामेदोव के साथ हुई अपनी बैठक के बारे में बताया कि राष्ट्रपति ने कहा कि विश्व स्तरीय योग केन्द्र की उनकी दृष्टि की दिशा में यह एक छोटी सी शुरुआत है, जो लोगों पर योग के प्रभाव को दर्शायेगी। महात्मा गांधी का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि मानव जाति आज दो बड़ी समस्याओं-आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन का सामना कर रही है जिसका समाधान महात्मा गांधी के जीवन और विचारों में पाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने आशा व्यक्त की कि योग केन्द्र और महात्मा गांधी प्रतिमा से मध्य एशिया में सकारात्मक संदेश फैलेगा।

भारत और किर्गिजस्तान के बीच हुए चार अहम समझौते

भारत और किर्गिजस्तान के बीच 12 जुलाई को चार अहम समझौते हुए। दोनों देशों ने आतंकवाद और चरमपंथ के खतरे के बीच शांतिपूर्ण पड़ोस की वकालत की है। भारत और किर्गिजस्तान ने सालाना संयुक्त सैन्य अभ्यास और सामरिक समन्वय को बढ़ावा देने का अहम करार किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किर्गिजस्तान के राष्ट्रपति श्री अल्मजबेक अतामबायेव के साथ बातचीत के बाद कहा कि आतंकवाद और चरमपंथ से मिलकर मुकाबला करने की जरूरत है। यह एक ऐसा खतरा है जिस पर सीमा का बंधन नहीं जुड़ा है। उन्होंने कहा कि किर्गिजस्तान ने हमारे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में शांतिपूर्ण और सुरक्षित पड़ोस की आवश्यकता जताई

है। इसके साथ ही किर्गिजस्तान ने आतंकवाद और चरमपंथ से मिलकर मुकाबले करने के प्रति भी सहयोग की बात कही है।

भारत और किर्गिजस्तान के बीच चार महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं, जिसमें रक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में हुए करार भी शामिल हैं। दोनों देशों के चुनाव आयोगों के बीच समन्यव बढ़ाने और आर्थिक संबंध मजबूत करने के लिए मानदंडों को बेहतर बनाने की दिशा में भी समझौते पर दस्तखत किए गए। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उनकी यह यात्रा दर्शाती है कि इससे मध्य एशिया के साथ हमारे संबंध एक नई ऊंचाई पर पहुंचे हैं। किर्गिजस्तान उनके लिए काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि किर्गिजस्तान के साथ रक्षा क्षेत्र में हमारे द्विपक्षीय संबंध काफी मजबूत रहे हैं। हाल ही में हमने संयुक्त सैन्य अभ्यास 'खंजर 2015' पूरा किया है। अब हमने सालाना आधार पर संयुक्त सैन्य अभ्यास करने का फैसला किया है।

ताजिकिस्तानः संस्कृति और कौशल विकास के क्षेत्र में दो समझौते

यात्रा के अंतिम चरण में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ताजिकिस्तान पहुंचे। वहां वे ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति श्री इमामअली रहमान से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने विविध क्षेत्रों में संबंधों को नयी उंचाइयों पर ले जाने का संकल्प किया। दोनों पक्षों ने संस्कृति और कौशल विकास के क्षेत्र में दो

समझौते किये। श्री मोदी और श्री रहमान ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण भी किया।

भारत और ताजिकिस्तान ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में परस्पर सहयोग बढ़ाने का प्रण किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि दोनों ही देश 'आतंकवाद के मुख्य स्रोत' के समीप स्थित हैं। उनका इशारा पाकिस्तान और

अफगानिस्तान की ओर था। मोदी की ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति इमामअली रहमान के साथ मुलाकात के दौरान दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश बढ़ाने के अलावा रक्षा संबंध मजबूत करने पर भी सहमति बनी।

दोनों नेताओं ने भारत और ताजिकिस्तान के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने के तौर तरीकों पर भी चर्चा की। वे उत्तर-दक्षिण परिवहन कारिडोर को प्रोत्साहित करने पर भी सहमत हुए। ये कारिडोर मध्य एशिया को दक्षिण एशिया से जोड़ेगा। श्री मोदी ने कहा कि ताजिकिस्तान मध्य एशियाई देशों में भारत के सबसे करीब है। हमारे बीच बस एक संकरा कोरिडोर है। व्यापार और वाणिज्य की पूर्ण क्षमता से दोहन करने के लिए कनेक्टिविटी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में कनेक्टिविटी के अन्य उपायों से संबंध मजबूत होंगे। इस कड़ी में उन्होंने ईरान के के चाहबहार बंदरगाह का जिक्र किया जो भारतीय निवेश से बन रहा है।

दोनों नेताओं ने प्रस्तावित पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान त्रिपक्षीय 'ट्रांजिट' व्यापार समझौते के दायरे में भारत को शामिल करने की संभावनाओं पर विचार विमर्श किया। दोनों का मानना है कि इससे ताजिकिस्तान और दक्षिण एशियाई क्षेत्र के बीच कारोबार में मदद मिलेगी । श्री मोदी ने कहा कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी का लगातार समर्थन करने हेतु ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति की सराहना की। ■

~~~~~~~~~~

पृष्ठ 6 का शेष...

स्वर्गवास हो गया। उस समय वो सत्ता में तो नहीं थे और अभी तो शपथ समारोह पूरा हुआ था। उसी समय अटल जी ने कहा आडवाणी जी आप उनकी अन्त्येष्टि में जाइये, उन्होंने देश के लिए बहुत काम किया है। कम्युनिस्ट पार्टी के नेता थे। भारतीय जनता पार्टी के घोर विरोध करने वाली उनकी विचार धारा थी। लेकिन सरकार बनने के दूसरे ही दिन फूल माला पहनने का कार्यक्रम नहीं, आडवाणी जी को वहां भेजा गया था। यह सार्वजनिक जीवन की आवश्यकता होती है।

इस कार्यक्रम से पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल डोगरा के बारे में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। जिसका जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी में दर्शाए गए किसी भी फोटोग्राफ में उनका परिवार दिखाई नहीं दिया। आज के सार्वजनिक जीवन में नेताओं के लिए यह एक संदेश है। प्रधानमंत्री ने ईद के अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल श्री एन. एन. वोहरा, मुख्यमंत्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद, केन्द्रीय मंत्री श्री अरूण जेटली, डॉ. जितेन्द्र सिंह, वरिष्ठ नेता श्री गुलाम नबी आजाद और डॉ. कर्ण सिंह भी मौजूद थे। ■
~~~~~~~~~~

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष का प्रवास

भारतीय जनता पार्टी एक विशिष्ट पहचानवाली राजनीतिक पार्टी है। भाजपा दुनिया की सबसे ज्यादा सदस्यों वाली पार्टी बन गयी है। गौरतलब है कि पार्टी के सदस्यों की संख्या 11 करोड़ हो गयी है। इन सभी सदस्यों से संपर्क कर पार्टी की विचारधारा से अवगत कराने के लिए महासंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। इसी निमित्त क्षेत्रशः समीक्षा बैठकें आयोजित हो रही हैं, जिसमें पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह स्वयं भाग ले रहे हैं और कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। प्रस्तुत है कुछ प्रमुख समीक्षा बैठकों का संक्षिप्त समाचार :-

मुंबई (महाराष्ट्र)

'भाजपा में आतंरिक लोकतंत्र पर हमें गर्व है'

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि उनकी पार्टी देश की ऐसी इकलौती है जो आंतरिक लोकतंत्र के सिद्धांतों का पालन करती है।

श्री शाह ने यहां कहा, 'देश में करीब 1600 पार्टियां हैं लेकिन बहुत कम ही आंतरिक लोकतंत्र के सिद्धांतों पर काम करती हैं। भाजपा इकलौती पार्टी है जहां आंतरिक लोकतंत्र के सिद्धांत का प्रभावी तरीके से पालन होता है और हमें इस पर गर्व है।' महाराष्ट्र सहित पश्चिमी क्षेत्र के पांच राज्यों के 'महासंपर्क अभियान' की समीक्षा के साथ बांद्रा में 09 जुलाई 2015 को हुई पार्टी की बैठक को संबोधित करते हुए श्री शाह ने उपरोक्त बातें कहीं।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया में भारत का कद बढ़ाकर देश का गौरव बढ़ाया है। यह रेखांकित करते हुए कि भाजपा ऐसी पार्टी है जहां जमीनी स्तर से जुड़ा कार्यकर्ता भी अपनी कड़ी मेहनत और लगन के बल पर शीर्ष पद पर पहुंचने की सोच सकता है। श्री शाह ने कहा, 'भाजपा में पद पाने के लिए किसी को परिवार विशेष में जन्म लेने की जरूरत नहीं है। पार्टी का कोई भी कार्यकर्ता जो पूरी लगन से काम करता है पार्टी अध्यक्ष या देश का प्रधानमंत्री बन सकता है।'

उन्होंने कहा, 'वर्तमान में भाजपा में 11 करोड़ सदस्य हैं। देश में बड़ी संख्या में लोग भाजपा के हितैषी हैं। हमने इन लोगों तक पहुंचने के लिए सदस्यता अभियान शुरू किया है। हम दक्षिणी और पूर्वोत्तर के राज्यों पर विशेष ध्यान देते हैं।' उन्होंने कहा कि पार्टी की सदस्य संख्या में तीन से सात गुना वृद्धि हुई है और यह पार्टी कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत का नतीजा है।

श्री शाह ने कहा कि भविष्य में पार्टी प्रशिक्षण अभियान चलाएगी। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष सत्ता में आने के बाद भाजपा-नीत केन्द्र सरकार ने 24 जनकल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं। उन्होंने पार्टी की विभिन्न शाखाओं में पारदर्शिता लाने की जरूरत पर भी जोर दिया।

श्री शाह ने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि वे जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के मूल सिद्धांतों के आधार पर संगठन

को मजबूत बनाएं।

उन्होंने कार्यकर्ताओं की मदद से एक निधि की स्थापना पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, 'हमें अपनी निधि इतनी मजबूत और पारदर्शी बनानी होगी कि पांच वर्ष बाद पार्टी निधि से मिलने वाले ब्याज से चले ना कि धनपतियों द्वारा।' श्री शाह ने राज्य में पार्टी की राजनीतिक स्थिति का जायजा लिया और पार्टी के 'महासंपर्क अभियान' की प्रगति की समीक्षा की। भाजपा प्रमुख ने महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा के पार्टी सांसदों, विधायकों और अन्य पार्टी पदाधिकारियों से भी बातचीत की।

कानपुर (उत्तर प्रदेश)

केवल भाजपा ही कर सकती है प्रदेश का चौमुखी विकास

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि वर्ष 2017 के विधानसभा चुनावों में सपा एवं बसपा नहीं, केवल भाजपा प्रदेश में सत्ता में आये, क्योंकि पार्टी मानती है कि प्रदेश का चौमुखी विकास केवल पार्टी ही कर सकती है। लेकिन इसके लिये जरूरी है कि नेता सदस्यों से व्यक्तिगत रूप से मिले और इनमें से सक्रिय सदस्यों का चयन करें जो पार्टी के लिये काम कर सकें।

श्री शाह 11 जुलाई 2015 को कानपुर में आयोजित महासंपर्क अभियान की समीक्षा बैठक में बोल रहे थे। पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद वे पहली बार कानपुर पहुंचे थे। समीक्षा बैठक में प्रदेश के लगभग सभी सांसद, विधायक और जिला अध्यक्षों के साथ वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल थे।

समीक्षा बैठक के बाद भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री कैलाश विजयवर्गीय और राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री श्रीकांत शर्मा ने पत्रकारों को उद्घाटन भाषण के बारे में जानकारी दी।

श्री शर्मा ने बताया कि भाजपा का मानना है कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था बहुत ही खराब है। इसका उदाहरण बाराबंकी में पुलिस स्टेशन में महिला को जला देना तथा शाहजहांपुर में पत्रकार को केरोसिन डालकर जला देना है। उन्होंने बताया कि भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अत्याचार की जांच के लिये एक जांच कमेटी का गठन किया है। यह जांच दल पहले बाराबंकी जायेगा और महिला को जलाने की पूरी मामले की जांच कर अपनी रिपोर्ट राष्ट्रीय अध्यक्ष को सौंपेगा। उन्होंने बताया कि भाजपा का लक्ष्य मात्र चुनाव जीतना नहीं, बल्कि अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से सक्रिय रूप से जोड़कर उन्हें राष्ट्र के प्रति एक समर्पित और निष्ठावान नागरिक बनाना है।

श्री विजयवर्गीय ने बताया कि श्री शाह प्रदेश में भाजपा के सदस्यता अभियान से काफी खुश हैं। पार्टी ने देश में 10 करोड़ नये सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा था लेकिन सदस्यों की संख्या 11 करोड़ के पास पहुंच गयी है और भाजपा दुनिया के सबसे ज्यादा सदस्यों वाली पार्टी बन गयी है। अब इनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर पार्टी की नीतियां बताना है और इन सदस्यों में से जो लोग पार्टी के सक्रिय सदस्य बनना चाहें उन्हें पार्टी के बारे में प्रशिक्षित करना है। उन्होंने कहा कि भाजपा की यही सबसे बड़ी खूबी है कि उसके सक्रिय सदस्य पूरी तरह से प्रशिक्षित होते हैं और यह सदस्य पूरे देश के कोने-कोने में पार्टी की नीतियों और विकास कार्यों से आम जनता को अवगत कराते हैं।

श्री विजयवर्गीय ने कहा कि अब सदस्य बनाने के बाद प्रदेश के जिला, मंडल, मोहल्ला, गांव आदि के नेताओं का कर्तव्य है कि वह अपने इन कार्यकर्ताओं तक श्यामा प्रसाद मुखर्जी से लेकर नरेन्द्र मोदी तक का संदेश दें और उन्हें पार्टी की विकास की नीतियों के बारे में बताये।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के भाजपा के नेताओं की तारीफ करनी होगी कि उन्होंने प्रदेश में एक करोड़ 86 लाख सदस्य बनाये अब इनमें से सक्रिय सदस्यों को पार्टी के बारे में पूर्ण प्रशिक्षण देना होगा ताकि वे इसके बाद भाजपा की नीतियों और विकास कार्यों का प्रचार प्रसार कर सकें।

भोपाल (मध्यप्रदेश)

'कार्यकर्ताओं को वैचारिक दृष्टि से एक नया आधार देना है'

भोपाल में 13 जुलाई 2015 को महासंपर्क अभियान के निमित्त आयोजित क्षेत्रीय बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह कहा कि देश को दुनिया में सर्वोच्च स्थान पर बिठाना है तो पांच साल की सरकार कुछ नहीं कर सकती। पांच साल की सरकार कुछ नहीं कर सकती – ऐसा कहता हूँ तो इसका मतलब यह नहीं है कि चीजों से हम भाग सकें, भागते हैं। मंहगाई को तो हम पांच साल में कम कर सकते हैं, देश की सीमाओं को तो हम पांच साल में सुरक्षित कर सकते हैं, विदेश नीति को रीड्राफ्ट कर के भारत का गौरव तो प्रस्तावित कर सकते हैं, आर्थिक विकास कर सकते हैं, युवाओं को रोजगार भी दे सकते हैं, गरीबी भी दूर कर सकते हैं, बेकारी भी दूर कर सकते हैं, मगर पांच साल के अंदर भारत माता को विश्व गुरु के स्थान पर बिठाने का सपना समाप्त नहीं होता, वह तभी हो सकता है जैसे कांग्रेस को आजादी के बाद एक समय मिला था, पंचायत से पार्लियामेंट तक 1950 से 1967 तक पूरी शासन की व्यवस्था उनके हाथ में थी, इस तरह से आज से लेकर पच्चीस साल तक भारतीय जनता पार्टी ने पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक हर चुनाव में विजय ही विजय प्राप्त करना होगा, तब जाकर यह काम हम समाप्त कर पाएंगे।

उन्होंने आगे कहा कि अगर 11 करोड़ कार्यकर्ता और इतने मंजे हुए संगठन के नेता और स्वीकृति प्राप्त जनमत प्राप्त – इतना हमारा चुना हुआ नेतृत्व – अगर ये एक साथ एक दिशा में एक मन से एक उत्साह के साथ एक गति के साथ काम करता है तो मैं मानता हूँ कि पच्चीस साल तक भारतीय जनता पार्टी को कोई हरा नहीं सकता। हमारा भविष्य विजय ही विजय है और कुछ नहीं। और इसी दृष्टि के साथ भारतीय जनता पार्टी के काम को पुनः एक बार हमें गति देनी है। पार्टी ने 14 नए इनिशिएटिव लिए हैं और सत्रह विभागों में काम को बांटा है। इसके आधार पर काम की रचना होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि देश के हर जिले में एक समान प्रकार से पार्टी चले, इस प्रकार की पार्टी की रचना करनी है। नए कार्यकर्ता को बनाना है, उनको प्रेरणा देनी है, उनको वैचारिक दृष्टि से एक नया आधार देना है। तब जाकर यह पार्टी लम्बे समय तक देश का नेतृत्व कर सकती है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शाह ने अपने भाषण में गत एक वर्ष में भाजपा नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार की 24 जनहित की योजनाओं को उल्लेखित करते हुए सरकार के प्रयासों की भी सराहना की।

दिल्ली

'राष्ट्रसेवा के प्रति कृतसंकल्पित है भाजपा'

भारतीय जनता पार्टी की क्षेत्रीय महासम्पर्क अभियान समीक्षा बैठकों की शृंखला के अंतर्गत 12 जुलाई 2015 को भाजपा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ 8 उत्तरी राज्य, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली एवं उत्तराखंड के प्रदेश पदाधिकारी, सांसद, विधायक, महासम्पर्क अभियान प्रमुख एवं सह-प्रमुख तथा

डिजीटल टीम के सदस्यों की बैठक दिल्ली के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविक सेन्टर में हुई। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने बैठक का उद्घाटन माँ भारती, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्रों के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया।

श्री अमित शाह ने कहा कि हमें गर्व है कि हमारी पार्टी ने आंतरिक लोकतंत्र को अपनाया है। यही कारण है कि बूथ स्तर से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक का चुनाव होना भाजपा में स्वीकार्य है। भाजपा ही वह दल है जहां एक साधारण कार्यकर्ता, प्रधानमंत्री एवं मंत्री बनकर देश निर्माण में सहयोग करता है। पार्टी में हर 6 वर्ष के पश्चात् सदस्यता का नवीनीकरण होता है यह वर्ष 2015 सदस्यता नवीनीकरण एवं संगठन चुनाव का वर्ष है और हमें इस कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करना है।

उन्होंने कहा कि जनता ने 2014 में संपूर्ण बहुमत के साथ श्री नरेन्द्र मोदी को देश का प्रधानमंत्री बनाया। हमें अधिकतर राज्यों में सफलता मिली, जहां कुछ राज्यों में हमें सफलता नहीं मिली वहां हमारा मत प्रतिशत बढ़ा है।

श्री शाह ने कहा कि 9 अगस्त, 2014 को हमने संगठन पर्व की घोषणा की थी और इसी के चलते भाजपा ने उत्तर-पूर्व के राज्यों के साथ-साथ दक्षिण में केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश जैसे राज्यों में संगठन को सुदृढ़ किया है और आज दक्षिण के राज्यों में भी भाजपा एक शक्तिशाली संगठन के रूप में उभर कर सामने आई है।

श्री शाह ने कहा कि इन सफलताओं का श्रेय हमारी पार्टी के समर्थकों एवं शुभचिंतकों को जाता है जो कि देश के कोने-कोने में हैं और करोड़ों की संख्या में हैं। 2014 की विजय के बाद नेतृत्व ने इन शुभचिंतकों तक पहुंचकर इन्हें पार्टी से परोक्ष रूप में जोड़ने का निर्णय लिया। साधारण सदस्यता प्रणाली से इतनी बढ़ी संख्या में शुभचिंतकों तक पहुंचना संभव नहीं था अत: पार्टी ने आधुनिक तकनीक का सहारा लिया और समर्थकों का आवाहन कर उन्हें मिस्ड कॉल के माध्यम से पार्टी से जुड़ने को आमंत्रित किया। हमारे समर्थक एवं शुभचिंतकों ने जिस तरह चुनाव में साथ दिया था उसी तरह संगठन को समर्थन देते हुए आज भारतीय जनता पार्टी को 11 करोड़ सदस्यों के साथ विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक राजनीतिक पार्टी बना दिया है। हमें हर्ष है कि दक्षिण के राज्यों में जहां हमें कमजोर आंका जाता था वहां भी 3 से 20 गुना तक सदस्यों की संख्या में वृद्धि हुई है। मिस्ड कॉल पद्धति का लाभ हुआ है कि कमजोर से कमजोर बूथों पर भी अब हमारे सदस्य चिन्हित हैं।

श्री अमित शाह ने कहा कि भाजपा राष्ट्र सेवा के प्रति कृतसंकल्प है और हम इन 11 करोड़ शुभचिंतक सदस्यों को केवल सत्ता पाने का हथियार नहीं मानते, हम इनको तेजपुंज संवेदनशील कार्यकर्ता बनाकर राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनायेंगे।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने घोषणा की कि महासम्पर्क अभियान के बाद संगठन को और सुदृढ़ करने के लिए देश भर में प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन होगा इसके अर्न्तगत 15 लाख कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस प्रशिक्षण वर्ग में हमें कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास का मनोयोग जगाना होगा।

कार्यकर्ताओं को विपक्ष के दुष्प्रचार का जवाब आक्रमकता के साथ देने का आवाहन करते हुये भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि कार्यकर्ता नेतृत्व की उपलब्धियों का जन-जन के मध्य प्रचार व चर्चा करें। हमें गर्व है कि विश्व का सर्वाधिक प्रसिद्ध राजनेता आज भारत के प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने 12 माह में 24 योजनाओं को क्रियान्वित किया है जिनमें विशेषकर जन-धन योजना, श्यामा प्रसाद मुखर्जी अरबन मिशन, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, अटल पेंशन योजना, नमामि गंगे, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, मुद्रा, अमृत, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत, मेक इन इंडिया, स्किल्ड इंडिया, डिजिटल इंडिया, सांसद आदर्श ग्राम योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, गरीब कल्याण योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, दीनदयाल पुनर्वास योजना, मृदा स्वस्थ्य कार्ड, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, सागरमल, स्मार्ट सिटी योजना और पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम सभी ने जनता और सरकार के बीच में एक नया संवाद स्थापित किया है। केन्द्र सरकार द्वारा किये जा

रहे परिवर्तनों के सुपरिणाम कार्यकर्ताओं को आगामी एक वर्ष में गौरवान्वित करेंगे।

श्री अमित शाह ने कार्यकर्ताओं से कहा कि यदि हम इन पांच वर्षों में अपनी उपलब्धियों के आधार पर जनता के हृदय में स्थान बनायेंगे तो जहां जनता के मध्य हमारा जनविश्वास बढ़ेगा वही जनाधार में भी वृद्धि होगी तथा जनता हमें आगामी कई दशक तक सेवा का लगातार मौका देती रहेगी।

गुवाहाटी (असम)

विस चुनाव की तैयारी में अभी से जुट जाएं भाजपा कार्यकर्ता

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह में पूर्वोत्तर के सात राज्यों के प्रतिनिधियों ने मौजूदा महा जनसंपर्क अभियान की पांच समीक्षा बैठकों में भाग लेकर यथास्थिति की समीक्षा की। बैठक में कार्यकर्ताओं को आगामी विधानसभा चुनाव से पहले इस अभियान के जरिए पार्टी की सांगठनिक शक्ति को मजबूत करने और आपसी तालमेल बढ़ाने का आह्वान किया गया। श्री शाह ने पूर्वोत्तर में भाजपा की सरकार बनाने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों से आए नेताओं के साथ मंत्रणा की। मालूम हो कि नगर के माछखोवा स्थित आईटीए सेंटर में प्रदेश भाजपा के नेतृत्व में आयोजित महा जनसंपर्क की समीक्षा बैठक हुई, जिसमें पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने असम समेत पूर्वोत्तर के सात राज्यों में चल रहे महाजनसंपर्क अभियान की समीक्षा की। साथ ही कार्यकर्ताओं को इस अभियान को जुलाई तक समाप्त करने का निर्देश दिया। शाह ने कार्यकर्ताओं से आपसी तालमेल रखने के साथ ही पूरे पूर्वोत्तर में पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने की सलाह दी। संवाददाता सम्मेलन में राष्ट्रीय महासचिव श्री कैलाश विजय वर्गीय ने कहा कि अलग-अलग पांच समीक्षात्मक बैठकें हुई जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष समेत सभी केंद्रीय नेताओं से महासंपर्क अभियान को आगामी जुलाई महीने के भीतर पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी है। देश के हर कोने की जनता ने अपना पूरा समर्थन दिया जिसके तहत यह अभियान चलाया। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर में भी लोगों ने भारी संख्या में पार्टी को समर्थन देते हुए सदस्यता ली और इसके तहत जोड़ा जा रहा है। भाजपा नेता ने कहा कि आगामी दिनों में पार्टी की ओर 15 लाख कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा और वे भाजपा की विचारधारा के तहत देशभर में काम करेंगे। वहीं राष्ट्रीय सचिव तथा प्रदेश के सांसद श्री रमेन डेका ने कहा कि अगले विस चुनाव में पार्टी की ओर से तय मिशन 84 को कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि इतनी संख्या में सदस्यता लेने से पार्टी की सेहत अच्छी होने वाली है। इस मौके पर राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) श्री रामलाल, राष्ट्रीय महासचिव श्री राम माधव, श्री अरुण सिंह, श्री कैलाश विजय वर्गीय, सुश्री सरोज पांडेय, राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) श्री सौदान सिंह, बीएल संतोष, राष्ट्रीय सचिव- सांसद व अरुणाचल प्रदेश के पर्यवेक्षक श्री रमेन डेका, राष्ट्रीय सचिव तथा असम प्रभारी श्री महेंद्र सिह, केंद्रीय खेल एवं युवा कल्याण मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री सर्वानंद सोनोवाल, केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री एवं प्रदेश चुनाव प्रभारी श्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय गृहमंत्री श्री किरण रिजीजू, मेघालय के प्रभारी श्री नलिन कोहली, नगालैंड के प्रभारी श्री फारुक खान, मणिपुर के प्रभारी श्री प्रह्लाद पटेल, त्रिपुरा के प्रभारी श्री सुनिल देवधर और मिजोरम के प्रभारी श्री पवन शर्मा जैसे नेताओं के साथ प्रदेश के सांसद व विधायकों ने भाग लिया और विस्तार से चर्चा की। वहीं उक्त बैठक में पूर्वोत्तर राज्य प्रदेश समितियों के पदाधिकारी, सभी जिला समिति के अध्यक्ष-सचिव महा जनसंपर्क अभियान के राज्य प्रमुख और सभी जिले के प्रमुख व सह प्रमुखों ने भाग लिया। विदित हो कि इस बैठक के आयोजन को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह देखा गया।

चारों तरफ सड़क से लेकर गली-मुहल्ले में भाजपा नेताओं के पोस्टर लगाए गए थे वहीं भाजपा जय की उद्घोष की जा रही थी। ■

'स्किल इंडिया' आवश्यक है 'मेक इन इंडिया' के लिए

✍ राम नयन सिंह

देश में 127 करोड़ से भी ज्यादा लोग रहते हैं और इसकी 65 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम है। यानी भारत एक युवा राष्ट्र है। भारत में हर वर्ष लगभग 1 करोड़ 20 लाख नौजवान पहले से मौजूद करोड़ों श्रमशक्ति की विशाल सूची में शामिल हो रहे हैं। तात्पर्य यह कि रोजगार की तलाश करने वाले लोगों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। ऐसी अवस्था में यदि युवाओं का रोजगारपरक कौशल विकास तेजी से न किया गया, तो ये युवा देश के लिए चुनौती बन जाएंगे। अतएव भारत की सबसे बड़ी प्राथमिकता नौजवानों के लिए रोजगार उपलब्ध कराना है और रोजगार के योग्य नौजवानों को तैयार करना भी है।

भारत एक विशाल एवं विकासशील राष्ट्र है। यहां शहरीकरण तेजी से हो रहा है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के पुराने ढांचे में भारी बदलाव हो रहा है। कृषि कभी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ थी, लेकिन अब सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में उसका योगदान घटकर मात्र 13.5 प्रतिशत के आसपास रह गया है। उल्लेखनीय है कि भारत में कृषि और कृषि आधारित कार्यों में लगभग 60 प्रतिशत लोग लगे हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि देश की आधी से अधिक आबादी का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 14 फीसदी से भी कम है। यानी कृषि पर भारी दबाव है और कृषि पर आधारित लोगों की आमदनी बेहद कम है। देश के ग्रामीण परिवारों में आधे से अधिक लोग छोटे-मोटे काम कर अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के नौकरीशुदा लोगों में से पांच प्रतिशत के पास सरकारी नौकरी है जबकि 3.5 प्रतिशत परिवार प्राइवेट सेक्टर में हैं।

पिछले दिनों भारत सरकार ने सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना-2011 पर ग्रामीण भारत की एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट का सारांश यह है कि गांवों में हर तीसरा परिवार भूमिहीन है और आजीविका के लिए शारीरिक श्रम पर निर्भर है। इस रिपोर्ट के अनुसार देश में कुल 24.39 करोड़ परिवार हैं जिनमें से 17.91 करोड़ परिवार गांवों में रहते हैं। इनमें से 10.69 करोड़ परिवार किसी न किसी श्रेणी में अभावग्रस्त हैं। यानी 50 फीसदी से अधिक ग्रामीण परिवार अभावग्रस्त हैं। गौरतलब है कि सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना में अभावग्रस्तता के लिए कच्चे मकान, भूमिहीन, बेराजगार, विकलांगता समेत कई श्रेणियां बनाई गई थीं। कहने का अर्थ यह है कि ग्रामीण भारत की हालत काफी खस्ताजनक है। नौजवानों को उचित रोजगार नहीं है और दो तिहाई ग्रामीणों के पास आय के पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। ऐसी हालात में लोगों की आमदनी बढ़ाने, बेहतर जीवन बनाने तथा देश के तीव्र विकास के लिए कृषि में लगे लोगों को बाहर निकालना जरूरी है। शहरों की भी हालत बहुत अच्छी नहीं है। यहां भी जो अकुशल हैं, उनका कौशल विकास करना और जो अर्द्धकुशल हैं, उन्हें बेहतर कौशल देना अत्यावश्यक है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में नौजवानों की निरंतर बढ़ती श्रमशक्ति को समुचित रोजगार देना तभी संभव है जब देश में सेवाओं के साथ-साथ विनिर्माण क्षेत्र के विकास पर काफी जोर दिया जाय। यही वजह है कि भारत सरकार द्वारा 'मेक

देश की आधी से अधिक आबादी का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 14 फीसदी से भी कम है। यानी कृषि पर भारी दबाव है और कृषि पर आधारित लोगों की आमदनी बेहद कम है। देश के ग्रामीण परिवारों में आधे से अधिक लोग छोटे-मोटे काम कर अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के नौकरीशुदा लोगों में से पांच प्रतिशत के पास सरकारी नौकरी है जबकि 3.5 प्रतिशत परिवार प्राइवेट सेक्टर में हैं।

इन इंडिया' पर बहुत जोर दिया जा रहा है। इसीलिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'स्किल इंडिया' मिशन का विजन रखा है, जिसके तहत इस साल 24 लाख कामगारों का कौशल विकास किया जाएगा और 2022 तक 40 करोड़ कामगारों का कौशल विकास करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है।

देश की संपूर्ण श्रमशक्ति की स्थिति पर नजर डालने के लिए जरूरी है कि यहां की साक्षरता दर पर गौर करें। इससे उपयुक्त कौशल विकास के अलावा शिक्षा के प्रसार की जरूरत और भी स्पष्ट हो जाएगी। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता दर 75.04 है। यानी देश की लगभग 30 करोड़ की आबादी अब भी साक्षर नहीं है। यानी इनका कौशल विकास एक अलग चुनौती है। साथ ही, साक्षरता के मामले में पुरुष और महिलाओं में भी काफी अंतर है। जहां पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 है वहीं महिलाओं में इसका प्रतिशत केवल 65.46 है। इसका अर्थ यह है कि महिलाओं में कौशल विकास के अलावा शिक्षा प्रसार की भी प्रबल जरूरत है। बात यही तक नहीं है, मात्र शिक्षा प्रसार से ही काम नहीं चलने वाला, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा होनी चाहिए। यदि आईआईटी और कुछ उत्कृष्ट शिक्षा संस्थानों को छोड़ दिया जाय, तो आजादी से ही देश में शिक्षा की गुणवत्ता पर काफी प्रश्न चिन्ह उठते रहे हैं। इसलिए नौजवानों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिया जाना भी बेहद जरूरी है। यह स्वयं में एक चुनौती भरा काम है। इस पर चर्चा अलग से हो तो बेहतर होगा। जहां तक कौशल विकास की बात है देश में कुशल श्रमशक्ति की भारी कमी है। भारत सरकार के अनुसार देश में कुशल श्रमशक्ति की संख्या 4 प्रतिशत से भी कम है, जबकि हमारे पड़ोसी व विकासशील देश चीन में कुशल श्रमशक्ति 47 प्रतिशत है। जर्मनी में कुशल श्रमशक्ति की संख्या 74 प्रतिशत है, तो जापान में 80 प्रतिशत है। पश्चिमी नहीं, बल्कि एशियाई मुल्क दक्षिण कोरिया में कुशल श्रमशक्ति 96 प्रतिशत है। गौरतलब है कि पूरे संसार की कुशल श्रमशक्ति का औसत भी 40 प्रतिशत है। इन उपर्युक्त तथ्यों से भारत की स्थिति एकदम स्पष्ट हो जाती है और यह भी साफ हो जाता है कि देश की श्रमशक्ति खासतौर पर युवाओं का अविलंब कौशल विकास करना बेहद जरूरी है। देश की अर्द्धशिक्षित-अशिक्षित विशाल श्रमशक्ति का समुचित कौशल विकास करके ही बेहतर रोजगार सृजन व रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। इसी रास्ते गरीबी के अभिशाप से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, लोगों का जीवन बेहतर, सुखी व संपन्न बनाया जा सकता है। बिना 'स्किल इंडिया' के 'मेक इन इंडिया' बेमानी है।

देश में कुशल श्रमशक्ति की संख्या 4 प्रतिशत से भी कम है, जबकि हमारे पड़ोसी व विकासशील देश चीन में कुशल श्रमशक्ति 47 प्रतिशत है। जर्मनी में कुशल श्रमशक्ति की संख्या 74 प्रतिशत है, तो जापान में 80 प्रतिशत है। पश्चिमी नहीं, बल्कि एशियाई मुल्क दक्षिण कोरिया में कुशल श्रमशक्ति 96 प्रतिशत है।

देश में मौजूदा शैक्षिक स्तर व इसके प्रसार को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कौशल विकास की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी एप्रेंटिस (औद्योगिक प्रशिक्षण) है। इस कार्य में केंद्र व राज्य सरकारों के साथ-साथ औद्योगिक समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि देश में एप्रेंटिस करने वाले लोगों की संख्या बहुत ही कम है। हाल ही में स्वयं भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि चीन में दो करोड़ लोग कारखानों में एप्रेंटिस कर रहे हैं। जापान में एक करोड़ एप्रेंटिस में काम कर रहे हैं। जर्मनी एक छोटा सा देश है जो भारत के कई राज्यों से भी छोटा है, वहां पर भी तीस लाख लोग एप्रेंटिस के रूप में काम कर रहे हैं, जबकि सवा सौ करोड़ के भारत में सिर्फ तीन लाख लोग एप्रेंटिस पर काम कर रहे हैं। एप्रेंटिस को मौके देना आज की आवश्यकता है। ऐसे लोगों पर ध्यान देने की जरूरत है जो बेरोजगार हैं, अकुशल हैं। देश में आईआईटी जैसे बड़े प्रतिष्ठानों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर आईटीआई (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) की बेहद जरूरत है ताकि गुणवत्ता युक्त कुशल मानव शक्ति तैयार हो सके। कुशल मानव शक्ति ही देश को गरीबी के कलंक से मिटा सकता है।

यही नहीं, पश्चिमी व जापान जैसे अनेक देशों में जहां कार्यशील श्रमशक्ति कम हो रही है, इन कुशल श्रमशक्ति का समायोजन कर देश की संपन्नता और प्रभुत्व का विस्तार किया जा सकता है। ■